आज़ादी का अमृत महोत्सव

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

G20 भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

श्रुति

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,
तिरुवनंतपुरम – 695001

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

राजभाषा विभाग

(सदैव ऊर्जावान : निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से प्रशिक्षण और प्राइज़से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे । हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे ।

जय राजभाषा जय हिंद !

श्रुति

हिंदी गृह पत्रिका

(32वां अंक)

(01 अक्तूबर, 2022 से 31 मार्च, 2023 तक)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,

तिरुवनंतपुरम – 695001

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक
श्रीमती जी सुधर्मिनी
प्रधान महालेखाकार

मुख्य संपादक
श्री एन दिनकरन
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

परामर्शदात्री समिति

श्री बिजू जोसफ
वरिष्ठ उप महालेखाकार

श्रीमती वल्सम्मा तोमस
वरिष्ठ उप महालेखाकार

संपादक मंडल

श्रीमती लोला आर
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्रीमती के आर रोहिणी
हिंदी अधिकारी, संपादक

संपादन सहयोग

श्रीमती एस संध्या
हिंदी अधिकारी

श्रीमती गेलीकृष्णा सी जी
हिंदी अधिकारी

श्रीमती निधि लक्ष्मी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है । रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे ।

संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार
1.	संरक्षक की कलम से.....	
2.	मुख्य संपादक की कलम से.....	
3.	संपादक मंडल की ओर से	
4.	पद्म पुरस्कार – भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार	
5.	पद्मश्री श्री वी पी अप्पुक्कुट्टन पोतुवाल जी	
6.	नेताजी की प्रतिमा, इंडिया गेट, नई दिल्ली	
7.	विश्व हिंदी सम्मेलन	
8.	अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन	
9.	द्वितीय अखिलल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान आयोजित सत्र “युवाओं को गर्व की अनुभूति कराती हिंदी” का सत्र विवरण	
10.	जय कन्हैया लाल की	कविता सुरेश, वरिष्ठ लेखाकार
11.	दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन	
12.	वर्ष 2021-2022 के दौरान मूल कार्य हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना के तहत पुरस्कार प्राप्त अधिकारी	
13.	देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका	सुमित कुमार, लेखाकार
14.	देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका	के शांति, सहायक लेखा अधिकारी

15.	देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका	डेयिसम्मा राजू, सहायक पर्यवेक्षक
16.	देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका	एम टी विजयन, सहायक लेखा अधिकारी
17.	एकता	के शांति, सहायक लेखा अधिकारी
18.	एकता	रमा टी एम, सहायक लेखा अधिकारी
19.	वर्ष 2022-2023 के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से संबंधित कार्यों का संक्षिप्त विवरण	
20.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुवनंतपुरम (कार्यालय-2) की गतिविधियां	
21.	चित्र	सतिधा, लेखाकार
22.	कार्यालय की कला साहित्यिक प्रतिभा – श्रीमती जेसिंथा मोरिस	
23.	01.10.2022 से 31.03.2023 तक की अवधि के दौरान सेवानिवृत्त अधिकारियों / कर्मचारियों की सूची	

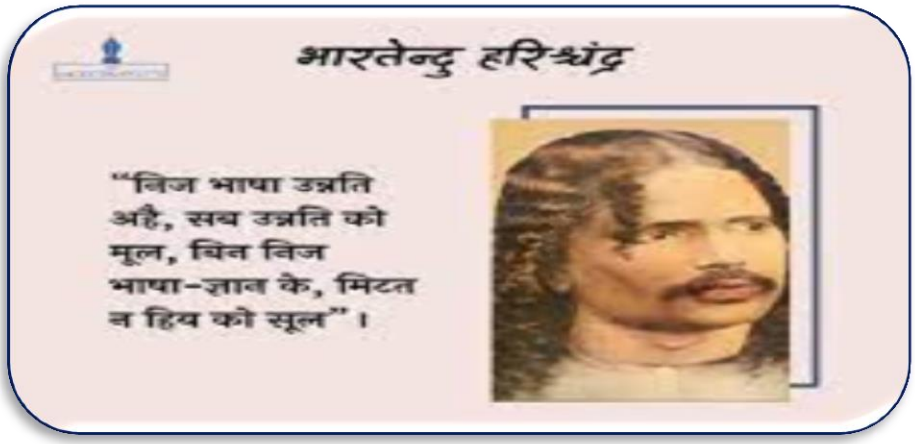
भारतेन्दु हरिश्चंद्र
"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल"।

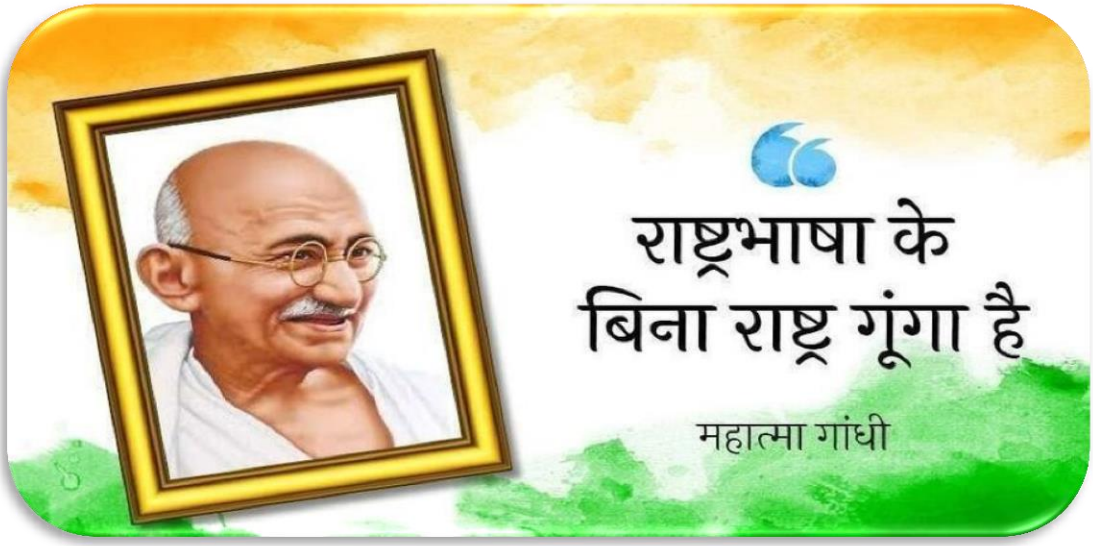
राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है
महात्मा गांधी

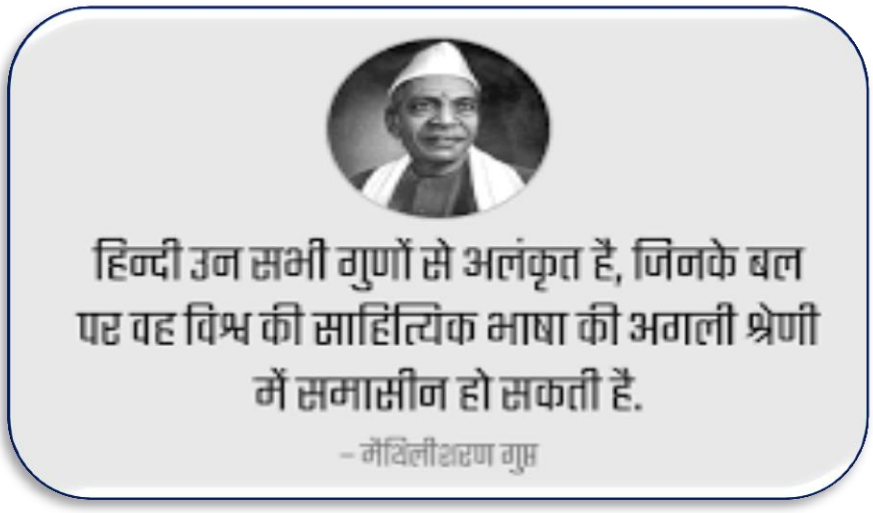
हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है.
– मैथिलीशरण गुप्त

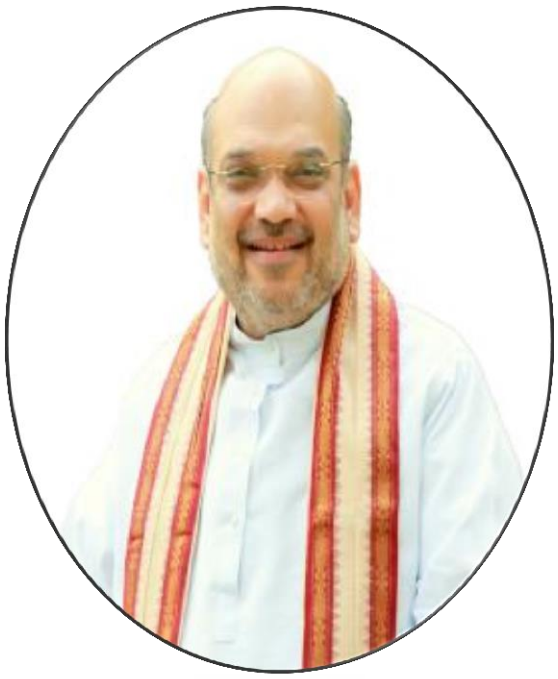

राजभाषा

जो लोग ये अपप्रचार करते हैं कि हिंदी स्थानीय भाषाओं की प्रतिस्पर्धी भाषा है, मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि हिंदी प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि सभी स्थानीय भाषाओं की सखी है । हिंदी के समृद्ध होने से देश की सभी स्थानीय भाषाएं समृद्ध होंगी व स्थानीय भाषाओं की समृद्धि से हिंदी समृद्ध होगी ।

श्री अमित शाह
माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री

राजभाषा

जी सुधर्मिनी
प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी), केरल

संरक्षक की कलम से .....

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "श्रुति" का 32वाँ अंक पाठकों के समक्ष सादर समर्पित है। इस पत्रिका ने हमारे कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के साथ-साथ कार्मिकों को रचनात्मक मंच प्रदान करने में भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किसी भी स्वाधीन देश के लिए, जो महत्व उसके राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का है, वही उसकी राजभाषा का है। प्रजातांत्रिक देश में जनता और सरकार के बीच भाषा की दीवार नही होनी चाहिए और शासन का काम जनता की भाषा में किया जाना चाहिए।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका कार्यालय में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन एवं प्रचार-प्रसार की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती रहेगी।

"श्रुति" पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

सुधार्मिनीजी

(जी सुधर्मिनी)
प्रधान महालेखाकार

एन दिनकरन

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

मुख्य संपादक की कलम से ....

हमारे कार्यालय द्वारा हिंदी ई-पत्रिका"श्रुति" के 32वें अंक का प्रकाशन अत्यंत गर्व एवं हर्ष का विषय है। हमारे कार्यालय में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के क्षेत्र में इस पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान है।

हिंदी हमारी राष्ट्रीय भाषा है और हमें हमेशा हिंदी भाषा का प्रयोग करते समय गर्व महसूस करना चाहिए। हिंदी भारतीय एकता का प्रतिनिधित्व करती है। केंद्र सरकार भी राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में हिंदी भाषा को बढ़ावा देने पर जोर देती है। हिंदी भाषा का समर्थन करना और हिंदी भाषा को सम्मान देना प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमारे देश का सम्मान और समर्थन करना होता है। यह पत्रिका हिंदी भाषा के प्रति हमारे समर्थन और सम्मान का प्रतीक है।

पत्रिका के इस अंक को सफल बनाने में सहयोग करनेवाले समस्त रचनाकारों को धन्यवाद तथा संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह आशा करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक आप सभी के पसंद आएगा तथा इसे पढने के पश्चात् अपनी प्रतिक्रियाओं से हमारा उत्साह बढाएंगे तथा मार्गदर्शन करेंगे।

(एन दिनकरन)

वरिष्ठ उप महालेखाकार

संपादक मंडल की ओर से........

"श्रुति" पत्रिका का यह नवीनतम अंक सभी पाठक बंधुओं को सादर समर्पित है । केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी में काम करने का वातावरण बनाने के लिए हर संभव उपाय किए जा रहे हैं । इस दिशा में हमारे कार्यालय का एक भव्य प्रयास है, हर वर्ष इस पत्रिका का प्रकाशन । हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा उपयुक्त वातावरण एवं अनुकूल मानसिकता न होना है । फिर भी, राजभाषा विभाग के विविध प्रयासों एवं प्रोत्साहन योजनाओं के परिणामस्वरूप हिंदी का प्रयोग दिन प्रति दिन बढ़ रहा है । भारत सरकार के सभी मंत्रालयों विभागों, कार्यालयों, उपक्रमों आदि में वार्षिक कार्यक्रम में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित विभिन्न मदों को पूरा करने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं । कार्यालय के उच्च अधिकारियों एवं सभी कार्मिकों का सहयोग लेते हुए सशक्त और संतुलित कदमों से हम हिंदी को उसके संपूर्ण स्वरूप में राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने के लक्ष्य की तरफ बढ़ रहे हैं । हमें आशा है, हम अपने लक्ष्य तक अवश्य पहुँचेंगे ।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति हम अपना आभार प्रकट करते हैं । "श्रुति" के पाठक बंधुओं से अनुरोध है कि पत्रिका के बारे में अपने अनमोल विचार एवं सुझावों से हमें अवगत कराएं ।

धन्यवाद ।

संपादक मंडल

पद्म पुरस्कार - भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार

पद्म पुरस्कार भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में से एक है। ये पुरस्कार, विभिन्न क्षेत्रों जैसे कला, समाज सेवा, लोक-कार्य, विज्ञान और इंजीनियरी, व्यापार और उद्योग, चिकित्सा, साहित्य और शिक्षा, खेल-कूद, सिविल सेवा इत्यादि के संबंध में प्रदान किए जाते हैं। ये पुरस्कार प्रत्येक वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर उद्घोषित किए जाते हैं तथा सामान्यतः मार्च/अप्रैल माह में राष्ट्रपति भवन में आयोजित किए जाने वाले सम्मान समारोहों में भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किए जाते हैं।

पद्म पुरस्कार तीन श्रेणियों में प्रदान किए जाते हैं।

"पद्म विभूषण" असाधारण और विशिष्ट सेवा;

"पद्म भूषण" उत्कृष्ट कोटि की विशिष्ट सेवा और

"पद्म श्री" किसी भी क्षेत्र में विशिष्ट सेवा के फलस्वरूप प्रदान किया जाता है।

गणतंत्र दिवस, 2023 की पूर्व संध्या पर 06 लोगों को पद्मविभूषण, 09 लोगों को पद्मभूषण और 91 लोगों को पद्मश्री से सम्मानित किया गया। इनमें केरल के **श्री वीपी अप्पुकुट्टन पोतुवाल** जी को सामाजिक कार्य के क्षेत्र में, **श्री एसआरडी प्रसाद जी** को खेल-कूद के क्षेत्र में, **श्री चेरुवयाल रामन जी** को कृषि के क्षेत्र में और **श्री सी आई आईज़क जी** को साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में उनकी विशिष्ट सेवा के फलस्वरूप पद्मश्री से सम्मानित किया गया। सभी विजेताओं को हार्दिक अभिनंदन एवं मंगलकामनाएँ।

श्री वी पी अप्पुकुट्टन पोतुवाल

श्री एसआरडी प्रसाद

श्री चेरुवयाल रामन

श्री सी आई आईज़क

पद्मश्री श्री वी पी अप्पुक्कुट्टन पोतुवाल जी

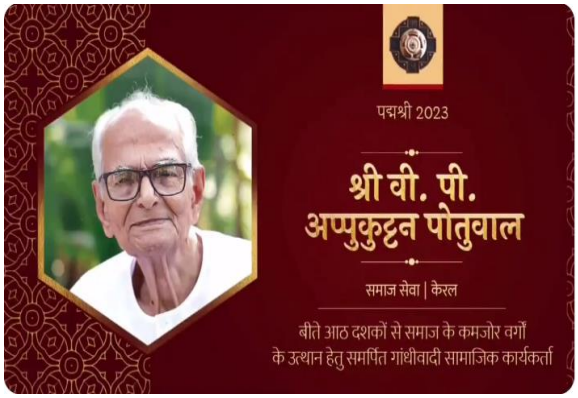

श्री वी पी अप्पुक्कुट्टन पोतुवाल जी का पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित होना समूचे केरल के लिए ही नहीं, बल्कि इस कार्यालय के लिए भी विशेष रूप से गौरव और हर्ष का विषय है, क्योंकि उनके सुपुत्र श्री योगेश ए, इस कार्यालय में वरिष्ठ लेखा अधिकारी के पद पर कार्य कर रहे हैं। श्री योगेश जी एवं उनके परिवार को "श्रुति" परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री वी पी अपुकुट्टन पोतुवाल जी ने सामाजिक कार्य के क्षेत्र में यह सम्मान जीता है। वे भारतीय स्वतंत्रता सेनानी रह चुके हैं और गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता हैं। उनका जन्म 9 अक्टूबर 1923 को हुआ। पय्यन्नूर संस्कृत पाठशाला और बेसल मिशन स्कूल, पय्यन्नूर में अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद, आपने लखनऊ विश्वविद्यालय और बाद में मैसूर विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया।

1934 में गांधीजी की पय्यन्नूर यात्रा के दौरान महात्मा गांधी के साथ हुई मुलाकात ने पोतुवाल जी के जीवन को हमेशा के लिए बदल दिया। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, पोतुवाल जी को कोषिकोड और कन्नूर में छात्र बैठकों में व्याख्यान देने के लिए अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार किया गया था, जिसके लिए उन्हें केंद्रीय जेल, कन्नूर में दो सप्ताह के लिए कैद किया गया था। व्यक्तिगत और पेशेवर रूप से, उन्होंने खादी और गांधीवाद के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। 1944 में, वे चरखा संघ की केरल शाखा में शामिल हो गए। उन्होंने कला में भी दिलचस्पी दिखाई थी।

1947 में, वे तत्कालीन मद्रास सरकार के तहत पय्यन्नूर में ऊर्जित खादी केंद्र के प्रभारी बने। उन्होंने विनोबा भावे और जयप्रकाश नारायण के साथ भूदान आंदोलन में भाग लिया। 50 के दशक की शुरुआत में, उन्होंने डेक्कन हेराल्ड के लिए एक पत्रकार के रूप में काम किया, जिसके दौरान उन्होंने पय्यन्नूर में जयप्रकाश नारायण के भाषण को कवर किया। 1957 में, उन्होंने कालडी में आयोजित नौवें सर्वोदय सम्मेलन के कार्यालय की देखभाल की। 1962 में, पोतुवाल जी खादी ग्रामोद्योग आयोग के कर्मचारी बन गए। उन्होंने गांधी स्मारक निधि के कार्यक्रम कार्यकारी अधिकारी, भारतीय संस्कृत प्रचार सभा के सचिव, संस्कृत महाविद्यालय पय्यन्नूर के प्राचार्य और पय्यन्नूर सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया है। एक कट्टर गांधीवादी आदर्शवादी, पोतुवाल जी ने अपना अधिकांश जीवन लोगों के बीच गांधीवादी आदर्शों और खादी को फैलाने में बिताया है। इन महान विभूति को सादर नमन !

नेताजी की प्रतिमा, इंडिया गेट, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने 26 जनवरी, 2023 गुरुवार को इंडिया गेट के पास स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस की भव्य प्रतिमा का अनावरण किया। नेताजी की प्रतिमा उसी स्थान पर स्थापित की गई है, जहां इस साल की शुरुआत में पराक्रम दिवस (23 जनवरी) के अवसर पर नेताजी की होलोग्राम प्रतिमा का अनावरण किया गया था। इस होलोग्राम प्रतिमा का अनावरण नेताजी की 125वीं जयंती के अवसर पर किया गया था।

प्रतिमा का अनावरण आजाद हिंद फौज के पारंपरिक गीत 'कदम, कदम बढ़ाए जा' की धुन के साथ किया गया। एक भारत-श्रेष्ठ भारत और अनेकता में एकता की भावना को दिखाने के लिए देश के कोने-कोने से आए 500 नर्तकों की ओर से एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। करीब 26,000 घंटे के अथक कलात्मक प्रयासों से अखंड ग्रेनाइट को तराश कर 65 मेट्रिक टन वजन की इस प्रतिमा को तैयार किया गया है।

काले रंग के ग्रेनाइट पत्थर से बनी 28 फीट ऊंची यह प्रतिमा इंडिया गेट के समीप एक छतरी के नीचे स्थापित की गई है। नेताजी की इस प्रतिमा को पारंपरिक तकनीकों और आधुनिक औजारों का उपयोग कर पूरी तरह हाथों से बनाया गया है। अरुण योगीराज के नेतृत्व में मूर्तिकारों के एक दल ने यह प्रतिमा तैयार की है। यह प्रतिमा भारत की विशालतम, सजीव, अखंड पत्थर पर हस्त निर्मित प्रतिमाओं में से एक है।

विश्व हिंदी सम्मेलन

12वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन विदेश मंत्रालय द्वारा फिजी सरकार के सहयोग से 15 से 17 फरवरी, 2023 तक फिजी में आयोजित किया गया। 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन को फिजी में आयोजित करने का निर्णय मॉरीशस में आयोजित 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में लिया गया था। सम्मेलन का मुख्य विषय था - **"हिंदी – पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा तक "**।

पहला विश्व हिंदी सम्मेलन 1975 में नागपुर, भारत में आयोजित किया गया था। तब से, विश्व के अलग-अलग भागों में, ऐसे 11 सम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका है। अभी तक पूर्व में आयोजित 11 सम्मेलनों के ब्यौरे इस प्रकार हैं:

क्र.सं.	सम्मेलन	स्थान	वर्ष
1.	प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन	नागपुर, भारत	10-12 जनवरी, 1975
2.	द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन	पोर्ट लुई, मॉरीशस	28-30 अगस्त, 1976
3.	तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन	नई दिल्ली, भारत	28-30 अक्तूबर, 1983
4.	चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन	पोर्ट लुई, मॉरीशस	02-04 दिसंबर, 1993
5.	पाँचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	पोर्ट ऑफ स्पेन, ट्रिनिडाड एंड टोबैगो	04-08 अप्रैल, 1996
6.	छठा विश्व हिंदी सम्मेलन	लंदन, यू.के.	14-18 सितंबर, 1999
7.	सातवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	पारामारिबो, सूरीनाम	06-09 जून, 2003
8.	आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	न्यूयार्क, अमरीका	13-15 जुलाई, 2007
9.	नौवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	जोहांसबर्ग, दक्षिण अफ्रीका	22-24 सितंबर, 2012
10.	दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	भोपाल, भारत	10-12 सितंबर, 2015
11.	ग्यारहवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	पोर्ट लुई, मॉरीशस	18-20 अगस्त, 2018

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

प्रथम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन– वाराणसी (13 व 14 नवंबर, 2021)

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा 13 व 14 नवंबर, 2021 को प्रथम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया गया। पहली बार अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन देश की राजधानी नई दिल्ली से बाहर किया गया। सम्मेलन का शुभारंभ 13 नवंबर, 2021 को पूर्वाह्न पूर्वाह्न 10.15 बजे दीनदयाल हस्तकला संकुल (व्यापार सुविधा केंद्र एवं शिल्प संग्रहालय), वाराणसी में आदरणीय केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी द्वारा किया गया। सम्मेलन में गृहमंत्री के साथ उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी, विधानसभा अध्यक्ष श्री हृदय नारायण दीक्षित जी, पूर्व राज्यपाल श्री केसरीनाथ त्रिपाठी जी, राज्यसभा सांसद श्री (डॉ.) सुभाष चंद्रा जी, गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा जी, श्री नित्यानंद राय जी, श्री निशीथ प्रमाणिक जी और संसदीय राजभाषा समिति के कई माननीय सदस्य भी शामिल रहें। इस अवसर पर माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी एवं माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन की स्मारिका का भी विमोचन किया।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि सभी हिंदी प्रेमियों के लिए यह संकल्प का वर्ष रहना चाहिए कि जब आज़ादी के 100 वर्ष हों तब देश में राजभाषा और सभी स्थानीय भाषाओं का दबदबा इतना बुलंद हो कि हमें किसी भी विदेशी भाषा का सहयोग लेने की जरूरत न पड़े। पहले हिंदी भाषा के लिए बहुत सारे विवाद खड़े करने का प्रयास किया गया था, लेकिन वो वक्त अब समाप्त हो गया है। देश के प्रधानमंत्री जी ने गौरव के साथ हमारी भाषाओं को दुनिया भर में प्रतिस्थापित करने का काम किया है। जनता का लक्ष्य होना चाहिए कि राजभाषा को मज़बूत करें। उन्होंने कहा कि जो देश अपनी भाषा खो देता है, वो देश अपनी सभ्यता, संस्कृति और अपने मौलिक चिंतन को भी खो देता है। जो देश अपने मौलिक चिंतन को खो देते हैं वो दुनिया को आगे बढ़ाने में योगदान नहीं कर सकते हैं।

इस सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में राजभाषा हिंदी के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई।

हिंदी दिवस, 2022 एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन–

सूरत, गुजरात (14 व 15 सितंबर, 2022)

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाहजी की अध्यक्षता में 14 व 15 सितंबर, 2022 को सूरत, गुजरात में हिंदी दिवस, 2022 एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। आदरणीय गृह मंत्री ने सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा - प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रमोदी जी ने आह्वान किया है कि अमृतकाल में देशवासियों को संकल्प लेना चाहिए कि आनेवाले 25 सालों में हमारा देश किसी भी भाषाई लघुता ग्रंथि से मुक्त होकर स्वभाषा का विकास करेगा और देश को दुनिया में सर्वोच्च स्थान पर पहुंचाएगा। जब तक हम इस बात का संकल्प नहीं करते कि हमारा शासन, प्रशासन, ज्ञान और अनुसंधान हमारी भाषाओं और राजभाषा में हो तब तक हम इस देश की क्षमताओं का उपयोग नहीं कर सकते। जो लोग ये अपप्रचार करते हैं कि हिंदी स्थानीय भाषाओं की प्रतिस्पर्धी भाषा है, मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि हिंदी प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि सभी स्थानीय भाषाओं की सखी है। हिंदी के समृद्ध होने से देश की सभी स्थानीय भाषाएं समृद्ध होंगी व स्थानीय भाषाओं की समृद्धि से हिंदी समृद्ध होगी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के माध्यम से देश में स्वभाषा में शिक्षा का बीज बोया है और देश जब आजादी की शताब्दी मनाएगा तब यह बीज वटवृक्ष बनकर देश की सभी भाषाओं को पल्लवित कर भारत को भाषा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने का काम करेगा। हमारी संस्कृति, इतिहास और अनेक पीढ़ियों में हुए साहित्य सृजन की आत्मा को समझने के लिए राजभाषा को सीखना बहुत जरूरी है। राजभाषा और स्थानीय भाषाओं द्वारा मिलकर पूरे देश से भाषाई लघुता की भावना को उखाड़ फेंकने का समय आ गया है।

भाषा सिर्फ विचारों की अभिव्यक्ति है, भाषा व्यक्ति की क्षमता का परिचायक नहीं हो सकती, देश के युवाओं को स्वभाषा को लेकर विदेशी शासन द्वारा उत्पन्न की गई हीन भावना को दूर कर अपनी स्वभाषा व राजभाषा को स्वीकार कर उन्हें समृद्ध बनाने में योगदान देना चाहिए।

जब तक देश का युवा अपनी क्षमताओं के आधार पर अपनी भाषा में मौलिक चिंतन की अभिव्यक्ति नहीं करेगा, वो कभी भी अपनी क्षमताओं को पूर्णतया समाज के सामने नहीं रख सकता क्योंकि मौलिक चिंतन की अभिव्यक्ति स्वभाषा से अच्छी किसी भी भाषा में नहीं हो सकती।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने हर वैश्विक मंच पर गौरव के साथ हिंदी में पूरे विश्व को संबोधित किया है, वैश्विक मंच पर सबसे ज़्यादा अगर किसी को सुना गया है तो हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को सुना गया है। मोदी जी ने अपनी भाषा में अपनी बात रखी, उनकी अभिव्यक्ति सटीक होती है और मन की गहराइयों से आती है इसलिए इसकी स्वीकृति भी ज्यादा है।

अभिभावकों से आग्रह है कि घर की दैनिक बातचीत में स्वभाषा का अधिकतम प्रयोग करें, बच्चों के सुनहरे भविष्य के लिए उन्हें अपनी-अपनी स्वभाषा जरूर सिखाएं, क्योंकि स्वभाषा से ही बच्चा देश के इतिहास व संस्कृति को जानकर देश की जड़ों से जुड़ सकता है। हिंदी को अगर लोकभोग्य, देश और दुनिया में स्वीकृत बनाना है तो हिंदी के शब्दकोश को वृहद बनाना पड़ेगा।

हमारा देश भाषाई रूप से बहुत समृद्ध है और इन भाषाओं ने हमारी संस्कृति, परंपरा और साहित्य को संभालकर रखा है। जब तक हम भाषाओं के सह अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं, तब तक अपनी भाषा में अपना देश चले इसको हम सिद्ध नहीं कर सकते हैं। हर भाषा और बोली को जिंदा रखना और उन्हें समृद्ध करना हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

स्वामी दयानंद सरस्वती मानते थे कि वेदों के ज्ञान और उनके द्वारा सभी धर्मों पर किए गए विश्लेषण को केवल हिंदी भाषा के माध्यम से ही पूरे देश की जनता तक सरलता से पहुँचाया जा सकता है, इसलिए उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश को हिंदी में लिखने का काम किया। गाँधीजी ने एक साक्षात्कार में कहा था कि अगर मुझे खाली समय मिलेगा तो मैं वो समय सूत कातने के साथ राजभाषा हिंदी को सीखने व उसे समृद्ध बनाने में व्यतीत करूंगा, गाँधीजी ने रोजगार व स्वभाषा से देश को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के दूरदर्शी संकल्प को आगे बढ़ाने का मार्ग दिखाया। हमें विदेशी भाषाओं से उत्पन्न होने वाली विदेशी सोच की जगह स्वभाषा से उत्पन्न होने वाली स्वदेशी सोच के आधार पर अपनी नीतियों और कार्यक्रमों को बनाना पड़ेगा और देश को आगे बढ़ाना पड़ेगा। गृह मंत्री ने कहा कि वे सभी हिंदी प्रेमियों को यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग पूरी तत्परता और तन्मयता के साथ हिंदी को मज़बूत करने के लिए काम कर रहा है। अगले दो साल में इसमें बहुत सारे नए-नए प्रयोग और फ़ैसले दिखाई देंगे और स्वभाषा के साथ राजभाषा को मज़बूत करने के स्वप्न पूरा होते दिखेंगे। जब तक हम भाषा की हीन भावना को नहीं छोड़ देते तब तक इस देश की क्षमता का उपयोग नहीं हो सकता।

इस अवसर पर आदरणीय गृह मंत्री जी द्वारा **"हिंदी शब्द सिंधु"** एवं **"कंठस्थ 2.0"** का विमोचन किया गया। उद्घाटन सत्र के उपरांत विभिन्न विषयों पर निम्नलिखित सत्र आयोजित किए गए –

14.09.2022 (बुधवार)

प्रथम सत्र (02.30 से 16.00 बजे तक)	:	विगत 75 वर्षों में राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा
द्वितीय सत्र (16.30 से 18.00 बजे तक)	:	युवाओं को गर्व की अनुभूति कराती हिंदी

15.09.2022 (गुरुवार)

प्रथम सत्र (09.15 से 11.15 बजे तक)	:	महात्मा गांधी का भाषा चिंतन और राष्ट्र के एकीकरण में सरदार पटेल का योगदान
द्वितीय सत्र (11.15 से 13.15 बजे तक)	:	भाषाई समन्वय का आधार है हिंदी
तृतीय सत्र (14.30 से 16.00 बजे तक)	:	भारतीय सिनेमा और हिंदी

दिनांक 14 सितंबर, 2022 को आयोजित द्वितीय सत्र"युवाओं को गर्व की अनुभूति कराती हिंदी" का सत्र विवरण

वक्ता : श्री प्रसून जोशी, कवि, गीतकार
अध्यक्ष, केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड

आपने अपना वक्तव्य शुरू करते हुए कहा कि हिंदी प्रेमियों को अपने लक्ष्य निर्धारित करने होंगे और उसके लिए प्रयास करना होगा। संघर्ष जीवन का तत्त्व है, यहाँ हर व्यक्ति संघर्षरत है, सबके अपने-अपने संघर्ष होते हैं। हमें जो संघर्ष मिलते हैं, उसे निभाना चाहिए, उसका महिमा मंडन नहीं करना चाहिए।

भाषा मानव जाति को सृष्टि का अनुपम वरदान है। कोई भी भाषा इतनी सक्षम नहीं है कि वह सूक्ष्मातिसूक्ष्म भाव, मानव हृदय में होने वाले कंपन पूरी तरह व्यक्त कर सके। इसीलिए बॉडी लांग्वेज के बारे में कहते हैं कि उस व्यक्ति के साथ बैठकर ऊर्जाएं अच्छी लगीं। नयनों की भी भाषा होती है, जिसपर आपने अपने गीत की कुछ पंक्तियाँ गाकर सुनाई –

"सीखो ना नयनों की भाषा पिया, कह रही तुमसे ये खामोशियाँ ....
लब तो ना खोलूँगी मैं, समझो दिल की बोली, सीखो ना नयनों की भाषा पिया ..."

नयनों की भाषा महत्वपूर्ण है। जीभ एक अभिव्यंजक संस्थान है, इसके पीछे जो घटित हो रहा है, उसे यह अभिव्यंजक संस्थान स्वर देता है। जब पूर्ण रूप से मानव अभिव्यक्त हो जाए, तो वह अभिव्यक्ति मौन हो सकती है। इसलिए हम सबको आध्यात्म की शरण लेनी पड़ सकती है। भाषा का एक और पक्ष है, वह एक सांस्कृतिक चादर है, जो युगों युगों से बुनी जा रही है, वह चादर जिसकी सुगंध, सुवास, धागा-धागा जब सामने होता है तो हमें लगता है कि यह अपनी भाषा है, यह अपनी चदरिया है, हमारे होने का प्रमाण है, और उसकी जडें हमारे अवचेतन से दूर हमारे अतिचेतन में है। संस्कृति की चादर में भाव के धागे भाषा से ही पिरोए जाते हैं। इसलिए हम कहते हैं- जडों से उपजी हुई भाषा। आपने अपनी कविता की कुछ पंक्तियाँ सुनाई –

उखड़े उखड़े क्यों हो तुम, सूख जाओगे,
जितनी गहरी जडें तुम्हारी उतनी तुम हरियाओगे
.....
जड़ का होना और जड होना अलग-अलग हैं,
जड़ के बिना कहाँ चेतन तुम हो सकते हो
.....

जड़-चेतन की अवधारणा चेतन को महत्त्व देती है। लेकिन 'चेतन' होने के लिए जड़ों से जुड़ना जरूरी है, यह केवल स्व-भाषा की साधना से होगा। यदि हम जडों से जुडे होते हैं, जब हमारी शाखाएं नृत्य करती हैं, तब मौलिक ज्ञान पैदा होती है। हमें एक ऐसी अभिव्यक्ति एक ऐसी विचारधारा चाहिए, जो हमारे जड़ों से जुडी होती है। मौलिक चिंतन, जिसमें संस्कृति की सुवास हो वह अपनी मातृभाषा में ही हो सकता है। हमें किसी अन्य संस्कृति का अनूदित रूप नहीं बनना है, मौलिक सोचवाला राष्ट्र बनना है।

हिंदी के शुद्ध रूप को लेकर अकसर विवाद होता है। हिंदी भाषा सदैव उदार रही है, वह अपनी भगिनी भाषाओं से, क्षेत्रीय भाषाओं, आंचलिक भाषाओं से शब्द लेती रही है, जिससे भाषा में सुंदरता आती है। हिंदी की उदारवादी प्रकृति रही है, यह एक समावेशी भाषा है, सबको साथ में लेकर चलती है। "तू धूप है, छम से बिखर..." – इस गाने में 'छम' शब्द उत्तराखंड़ की कुमाँउनी भाषा से लिया गया है। धूप की जो कल्पना है, उसे 'छम' शब्द से व्यक्त किया गया है।

हिंदी के शुद्ध रूप को लेकर जो विवाद होता है, वह निरर्थक है। प्रश्न तब आता है, जब किसी अन्य कारणों से, बाहरी प्रभाव से असहज रूप से अन्य शब्द हमारे शब्दों की जगह घुस जाते हैं। एसएमएस शब्द हिंदी में आ सकता है, लेकिन अगर एसएमएस शब्द संदेश शब्द की हत्या करके आएगा, तो स्वीकार्य नहीं होगा। जब शब्द मरता है, तो उससे जुडी संस्कृति मरती है। अंग्रेज़ी के शब्दों का अनावश्यक प्रयोग न हो। ढोल जब बज रहा हो, तब बांसुरी नहीं सुनायी देगी। बांसुरी सुनने के लिए प्रयास करने पड़ेंगे और बांसुरी कोयदि जीवित रखना है तो

ढोल से कहना होगा कि धीमा हो जा, मुझे बांसुरी सुननी है। बाँसुरी की मीठी धुन सुनने के लिए यह जरूरी है कि ढोल को धीमा किया जाए। यही बात हिंदी के प्रचार के लिए अंग्रेजी के बारे में कही जा सकती है।

अंग्रेज़ी भाषा से बैर नहीं होना चाहिए। भाषा एक उपवन है, जहाँ हर पुष्प खिली है, जिसकी एक सुंदरता है, खूबसूरती है। भाषा को दंगल में परिवर्तित नहीं करना चाहिए। भाषाएँ कभी एक दूसरे से नहीं लड़ती। सब भाषाएं महत्त्वपूर्ण हैं। लेकिन अंग्रेजी का अनावश्यक प्रयोग करने से हमारी भाषा के मूल शब्दों की हत्या हो रही है। स्वाभाविक रूप से अंग्रेजी जब हमारे जीवन में आती है, जैसे कहीं का कोई आविष्कार है या उस शब्द का जन्म जिस जगह से हुआ है, तो उसे स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। कभी-कभी अंग्रेज़ी न जानने की वजह से बड़े वाचाल लोग भी चुप रह जाते हैं। हिंदी भाषा के प्रति लघुता का बोध शोचनीय है। हिंदी फिल्म उद्योग में भी हिंदी शूटिंग तक सीमित रहती है, उसके बाद अंग्रेज़ी शुरू हो जाती है।

कई वर्ष हमारी प्रतिभाओं ने भाषा को साधने में अपनी मातृभाषा को बचाए रखने में लगाई। अगर कहीं से भी न्यूनता का बोध हमारी भाषा से जुडा है, तो उसे हटा देना चाहिए। भाषा माँ होती है, माँ हमको उदारता देती है, यह रिश्ता अपनी मातृभाषा से ही हो सकती है। भाषा हिंदी होने के बावजूद हुनर अंग्रेजी हो सकता है। हुनर के लिए कोई भी भाषा सीखी जा सकती है। कोई भी अंग्रेज़ी में निष्णात हो सकता है, लेकिन वह उसकी भाषा नहीं बल्कि हुनर है। अंग्रेजी जाननी चाहिए, जरूरी होने पर बोलनी भी चाहिए, लेकिन एक स्किल के तौर पर। यह हमारे लिए कभी भी अपनी भाषा का विकल्प नहीं हो सकती।

हिंदी की शुद्धता और व्याकरण पर चर्चाएँ होती रहती हैं। जो हिंदी सीख रहे हैं और टूटी फूटी हिंदी बोलते हैं, उनका सम्मान करना चाहिए। उनकी जो सीखने की रूचि है और हिंदी के प्रति जो समर्पण है, उसको प्रणाम करना होगा। उसका मज़ाक नहीं उड़ाया जाना चाहिए। कोई भी भाषा समृद्ध नहीं होगी, अगर उसे बोलने और सीखनेवाले नए लोग नहीं आएंगे। आज समय बदल रहा है और हिंदी भाषा में एक नई त्वरा एक नई ऊर्जा देखने को मिल रही है। आजके युवा आइडियाज़ लेकर घूम रहे हैं और उसे लेकर स्टार्ट-अप शुरू कर रहे हैं। ऐसे युवा भाषा से कहीं आगे निकल चुके हैं। उनके मन में हिंदी भाषा को लेकर उतनी लघुता का बोध नहीं है, जो आज से एक पीढ़ी पहले था। इस आत्मविश्सास को और बढ़ाना है। पूरानी पीढी में अंग्रेज़ी भाषा सीखनेवालों का वर्चस्व था जो अब समाप्ति की ओर बढ़ रही है।

निम्न कविता की पंक्तियों का पाठ करके आपने अपनी बात समाप्त की –

सर्प क्यों इतने चकित हो, दंश का अभ्यस्त हूं
पी रहा हूं विष युगों से सत्य हूं अश्वस्त हूं
ये मेरी माटी लिये है गंध मेरे रक्त की
जो कहानी कह रही है मौन की अभिव्यक्त की
मैं अभय ले कर चलूंगा ना व्यथित ना त्रस्त हूं

वक्ष पर हर वार से अंकुर मेरे उगते रहे
और थे वे मृत्यु भय से जो सदा झुकते रहे
भस्म की संतान हूं मैं मैं कभी ना ध्वस्त हूं
है मेरा उद्गम कहां पर और कहां गंतव्य है
दिख रहा है सत्य मुझको रूप जिसका भव्य है
मैं स्वयम् की खोज में कितने युगों से व्यस्त हूं
है मुझे संज्ञान इसका बुलबुला हूं सृष्टि में
एक लघु सी बूंद हूं मैं एक शाश्वत वृष्टि में
है नहीं सागर को पाना मैं नदी संन्यस्त हूं।

वक्ता - श्री गंगा सिंह राजपूत, आई ए एस

श्री गंगा सिंह राजपूत आईएएस, छोटा उदयपुर, राजस्थान में जिला विकास अधिकारी के पद पर पदस्थापित हैं। वे 2017 बैच केगुजरात केडर आईएएस अधिकारी हैं। जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय से हिंदी साहित्य में एमए किया। यूपीएससी परीक्षा 2016 में 33वीं रैंक के साथ हिंदी माध्यम के द्वितीय टोपर रहे हैं।

मंच पर उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों का अभिवादन करने के बाद आपने यह कहते हुए अपना वक्तव्य शुरू किया कि आज उनके इस सम्मेलन में होने की एकमात्र वजह हिंदी है। आपने भारतेंदु हरिश्चंद्र जी की इन पंक्तियों का उल्लेख किया "निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय के सूल"। हिय यानि हृदय में अगर कोई कांटा है तो उसको निकालने की क्षमता सिर्फ मातृभाषा के पास है। मातृभाषा और अपनी स्वभाषा के बिना यह काम कोई और नहीं कर सकता। एक उदाहरण के माध्यम से इस बात को पुनः साबित किया कि जब वे दिल्ली से गुजरात के जूनागढ़ जिले में ज्वाइन करने के लिए टैक्सी से सफर कर रहे थे तो गुजराती कार ड्राइवर से गुजराती में दो शब्द कहने पर ड्राइवर ने भी हिंदी में बात करना शुरू किया। यह मातृभाषा की जो शक्ति है, स्वभाषा के प्रति हमारा जो प्रेम रहता है यह कोई दूसरी भाषा नहीं सिखा सकती।

कहा जाता है कि दुनिया में एक ही चीज अपरिवर्तनीय है, वह है परिवर्तन। परिवर्तन समय-समय पर सभी भाषाओं में होता रहता है। भाषा बहती नीर है अगर बहती नीर के समान एक भाषा काम करेगी तो वह हमेशा फलेगी फूलेगी, पल्लवित होगी, पुष्पित होगी। लेकिन अगर भाषा सीमाओं में अपने दायरे में सिमट कर रह जाएगी तो उस भाषा का अस्तित्व खत्म हो जाएगा। यह प्रत्येक भाषा, बोली या उपभाषा पर लागू होता है। अगर लोक संस्कृति का कोई भी पहलू, भले ही लोक संगीत हो लोक नृत्य हो उसको अगर जिंदा रखना है, लोक संस्कृति के तमाम पहलुओं को जिंदा रखना है तो लोक भाषा के प्रति अपने प्रेम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। अगर लोक भाषा खत्म हो जाएगी तो लोक संस्कृति भी जिंदा नहीं रह पाएगी।

अकसर देखा गया है कि काफी लोग अपनी मूल भाषा बोलने से कतराते हैं। अंग्रेजी या किसी दूसरी भाषा में अच्छे से बात करने की क्षमता न होने के बावजूद भी लोगों को सिर्फ दिखावे के लिए अंग्रेजी भाषा में बात करते हुए देखा गया है। सिर्फ दिखावे के लिए अपनी भाषा के स्थान पर किसी दूसरी भाषा बोलना सही नहीं है। हमारे जीवन में तीन माँ होती है - एक माँ जो हमें जन्म देती है, दूसरी धरती माँ जिस पर अन्न उगाकर हम अपना पालन पोषण करते हैं और एक भाषा रूपी माँ होती है जो हमें संप्रेषण का माध्यम प्रदान करती है। अगर अपनी माँ से दूर रहकर किसी अन्य को गले लगा रहे हैं तो यह सही नहीं है। किसी भी भाषा को सीखने में कोई आपत्ति नहीं है लेकिन अपनी भाषा को भूलना बहुत बड़ा अपराध है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान गांधीजी ने कहा था कि अगर हमें पूर्ण स्वराज चाहिए तो हमें भाषाई स्वराज मिलना चाहिए। सिर्फ शासन व्यवस्था बदलने से पूरा काम नहीं होता, हमारी भाषा, हमारे ही मूल्य जुडे रहे वह बहुत ज़रूरी है। हिंदी के प्रति किसी प्रकार के हीन बोध को त्यागें और आगे बढ़ें। हिंदी हमें आगे बढ़ने का बल देगी।

भारत पूरे विश्व का सबसे युवा देश है। भारत में युवा आबादी अधिक है और युवा आबादी के कंधों पर ही हिंदी भाषा और अन्य भारतीय भाषाओं का भविष्य टिका हुआ है। हिंदी भाषा में मूल शब्दों की संख्या लगभग ढाई लाख के आसपास है जो अन्य भाषाओं की तुलना में काफी अधिक है। हिंदी भाषा और अन्य भाषाओं के बारे में कहा जाता है कि चारकोस पर बदले पानी आठकोस पर बदले बानी। इतनी भाषाई विविधता से भरे हुए हमारे देश में जरूरी है कि इस विविधता को हम बनाए रखें और सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी से जुड़े रहे। किसी भाषा के विकास में सबसे ज्यादा जरूरी है कि वह भाषा व्यापार के क्षेत्र में भी फले-फूले, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भी फले-फूले, शिक्षा के क्षेत्र में भी आगे बढ़े और संप्रेषण-संचार का माध्यम भी बने। इन चारों क्षेत्रों में अगर कोई भाषा आगे बढ़ेगी तभी उस भाषा का सर्वांगीण विकास होगा।

वक्ता : श्री निशांत जैन, आईएएस

राजस्थान के जालौर जिले के जिला कलेक्टर के पद पर पदस्थापित श्री निशांत जैन, आईएएस 2014 बैच के आईएएस अधिकारी हैं। यूपीएससी परीक्षा 2014 में 13वीं रैंक के साथ हिंदी माध्यम के टोपर रहे हैं। आपने लोकसभा सचिवालय में राजभाषा प्रभाग में दो साल काम किए। दिल्ली विश्वविद्यालय से हिंदी में एमफिल किया। वे एक लेखक भी हैं। "रुक जाना नहीं" और "राजभाषा के रूप में हिंदी" उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

कवि दुष्यंत कुमार की निम्न पंक्तियों के साथ आपने अपना वक्तव्य शुरू किया -

इस नदी की धार में ठंडी हवा आती तो है,
नाव जर्जर ही सही, लहरों से टकराती तो है।
एक चिनगारी कहीं से ढूँढ लाओ दोस्तों,
इस दिए में तेल से भीगी हुई बाती तो है।

आपने इस बात की ओर ध्यान दिलाया कि मंच पर बैठे श्री प्रसून जोशी जी देवभूमि उत्तराखंड से आते हैं, श्री पंकज त्रिपाठी जी बुद्ध और महावीर की नगरी बिहार से आते हैं और श्री गंगा सिंह जी मरुभूमि और वीरों की भूमि राजस्थान से आते हैं और वे स्वयं उत्तर प्रदेश से आते हैं। जिन्होंने हिंदी को अपनी मज़बूरी नहीं बल्कि मज़बूती बनाया, उन सबसे हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। आपने एक शिक्षक द्वारा अपने विद्यार्थियों को आगे बढ़ने की प्रेरणा देनेवाली कथा सुनाई। हिंदी की प्रगति के मामले में भी हमें दूसरों की लकीर को छोटा करने के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए, बल्कि खुद अपनी लकीर को बड़ा करना चाहिए। दूसरी भाषा को छोटा नहीं करना है, पर अपनी भाषा को बढ़ाना है।

अंग्रेज़ी को अपनाने से अपनी भाषा का स्वाद व तेवर लुप्त नहीं होना चाहिए। हिंदी के साथ अपना संबंध बयान करते हुए उन्होंने कहा कि उनकी स्कूली शिक्षा हिंदी माध्यम से हुई, युपीएससी में भी हिंदी माध्यम चुना, उनकी वैकल्पिक भाषा हिंदी साहित्य था, हिंदी साहित्य में एमफिल किया, हिदी की नौकरी की और हिंदी माध्यम से युपीएससी में सर्वोच्च स्थान भी मिला। आपने इंटरनेट और सोशल मीडिया पर हिंदी के प्रयोग को लगातार बढाने का आह्वान किया। हम सबको यह संकल्प लेना है कि जब भी एसएमएस, व्हाट्सएप आदि में लिखें तो हमेशा देवनागरी में लिखें। पिछले दो दशकों में हिंदी रोज़गार का सबसे बड़ा माध्यम बनके उभरी है, चाहे वह मीडिया का क्षेत्र हो, फिल्म उद्योग हो या अनुवाद का क्षेत्र हो। लेखन की दुनिया में भी हिंदी में बहुत उभार आया है। मीडिया और बाज़ार में हिंदी ने अपना वर्चस्व बनाया है। देखने और सुनने के माध्यम के रूप में हिंदी का प्रयोग लगातार बढा रहे। लेकिन ज्ञान की भाषा के रूप में, पढाई की भाषा के रूप में, मेडिकल व इंजीनियरिंग की पढाई की भाषा के रूप में हिंदी और आगे बढे। आज की दौर में युवा उसी चीज़ को पसंद करते हैं, जो कूल होती है, जो बिंदास होते हैं। प्रसून जोशी और पंकज त्रिपाठी जैसे लोगों ने हिंदी को कूल बनाने का काम किया है। जो भी हमें देसीपन, अपनापन और नोस्टालजिया का एहसास कराएगा, वह हमारे दिल पे दस्तक देगा। इसलिए जितने भी अंग्रेज़ी का प्रयोग करो, हिंदी ही हमें हमारे घर, हमारी चौपाल, हमारे गाँव का एहसास कराती है। हम जब हंसते हैं, रोते हैं, गुनगुनाते हैं, मुस्कुराते हैं या बहुत गुस्सा होते हैं तो अपनी मातृभाषा का ही प्रयोग करते हैं। श्री केदार नाथ सिंह जी की प्रसिद्ध कविता मातृभाषा के पाठ के साथ आपने अपनी बात समाप्त की –

जैसे चींटियाँ लौटती हैं बिलों में
कठफोड़वा लौटता है काठ के पास
वायुयान लौटते हैं एक के बाद एक
लाल आसमान में डैने पसारे हुए
हवाई अड्डे की ओर
ओ मेरी भाषा
मैं लौटता हूँ तुम में जब चुप रहते-रहते
अकड़ जाती है मेरी जीभ
मेरी आत्मा दुखने लगती है।

वक्ता : श्री पंकज त्रिपाठी, अभिनेता

भारत के विभिन्न भागों से आए हुए सम्मेलन के प्रतिभागियों को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं देते हुए आपने अपना वक्तव्य शुरू किया। आपने कहा कि प्रतिभावान लेखकों की बदौलत ही अभिनेताओं को पहचान मिलती है। उन्होंने निराला की पंक्ति "आज मन भावन हुआ है, जेठ में सावन हुआ है" उद्धृत करते हुए कहा कि कवि ने इतनी सहज और छोटी बात कितनी खूबसूरती से अभिव्यक्त किया है।

हिंदी उनके लिए केवल संप्रेषण या अभिव्यक्ति की बात नहीं, बल्कि रोज़गार है, हिंदी सिनेमा से जुड़े होने के नाते हिंदी की खाते हैं और हिंदी से परिवार चलता है। लेकिन वे यह महसूस करते हैं कि हिंदी सिनेमा भले ही हिंदी में बनती हैं लेकिन बनाने वालों में अंग्रेजियत है। देसी आदमी होने के नाते वे आचरण में हिंदी को रखने की कोशिश करते हैं। हिंदी की संप्रेषणीयता अद्भुत है। जेठ में सावन जैसे अद्भुत भाषिक प्रयोग हिंदी के सौष्ठव को बढ़ाते हैं। यह किसी अन्य भाषा में संभव नहीं। कक्षा 12 तक जिस व्यक्ति को गृहनगर गृह जनपद में भी कोई नहीं पहचानता था, उसे आज गृह मंत्रालय ने इतने बड़े मंच पर बुलाया, यह हिंदी का प्रताप है।

दर्शक बहुत सालों से हिंदी सिनेमा देखते आए हैं। हिंदी फिल्में जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं। लेकिन अलग भाषा में सोचकर हिंदी में अभिव्यक्ति करने पर कनेक्शन नहीं बन पाता है। वे अपनी स्क्रिप्ट देवनागरी में ही पढते हैं। देवनागरी लिपि में हिंदी के शब्दों को देखकर याद करना आसान होता है। रोमन में कई बार अर्थ का अनर्थ भी हो जाता है।

हिंदी फिल्म उद्योग में अंग्रेज़ी में ज़्यादा सोचते हैं, लिखते हैं। फिर भी हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में हिंदी फिल्मों का योगदान रहा है। हिंदी को लेकर हमें उदार बनना चाहिए। विदेशों में भी फिल्म फेस्टिवलों के अवसर पर भारतीय मूल के लोग ही नहीं, बल्कि विदेशी मूल के लोग भी हिंदी फिल्मों के संवाद बोलते हैं, जिसे वे फिल्मों से ही सीखते हैं। हिंदी सिनेमा ने बिना ब्रेंड एंबासडर बने ही देश विदेश में हिंदी का प्रचार करने का काम किया है। अभिनेता नहीं, बल्कि उसका चरित्र बड़ा होता है और उस चरित्र की भाषा हिंदी होती है ।

संक्षेप : उक्त सत्र के सभी गुणी वक्ताओं के अनुसार युवाओं को हिंदी भाषा को आगे बढाने में योगदान देना चाहिए। हिंदी भाषा बोलने में हीनता या लघुता की भावना से ऊपर उठना होगा। भाषा नदी की तरह प्रवाहमान होनी चाहिए। सभी भाषाएँ सीखना चाहिए परंतु अपनी भाषा नहीं भूलना चाहिए। दैनिक जीवन में हिंदी का उपयोग बढाएं। हम सबको यह संकल्प लेना है कि जब भी एसएमएस, व्हाट्सएप आदि में लिखें तो हमेशा देवनागरी में लिखे। अपने देसीपन को कभी न छोड़े। हिंदी माध्यम से पढ़कर आनेवाले और सिविल सेवा में हिंदी माध्यम से परीक्षा देनेवाले युवा किसी से कमतर नहीं हैं। हिंदी भाषा में बोलने से युवाओं को गर्व की अनुभूति होनी चाहिए।

जय कन्हैयालाल की .....

कविता सुरेश
सहायक पर्यवेक्षक

भगवान श्रीकृष्ण का बाल रूप हमेशा से ही भक्तों को मोहित करता रहा है। भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव ज्यादातर दो दिन मनाया जाता है। उनका अवतार भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अष्टमी की अर्धरात्रि में रोहिणी नक्षत्र के अंतर्गत वृष लगन में हुआ था, परंतु इसके साक्षी केवल देवकी और वसुदेव ही थे। भगवान के निर्देशानुसार उन्हें रात में ही मथुरा के कारागार से गोकुल में नंदबाबा के घर ले जाया गया। वहाँ

योगमाया के प्रभाव से सभी निद्रामग्न थे। यहाँ तक कि यशोदा माता को बालक श्रीकृष्ण की उपस्थिति का मान प्रातः काल प्रसव पीड़ा की मूर्च्छा से उठने के बाद ही हुआ। सुबह यह शुभ समाचार सारे गोकुल में फैल गया कि नंदबाबा के यहाँ पुत्र का जन्म हुआ है। इसी के कारण सनातन धर्म में यह विशेष व्यवस्था बनी कि वैष्णवों के अतिरिक्त अन्य सभी लोग आर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमीवाले दिन श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत रखेंगे। किंतु वैष्णव गुरु से दीक्षा प्राप्त भक्तगण और साधु-संत अपने संप्रदाय के नियमानुसार सप्तमी से संयुक्त अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी तिथि को त्यागकर दूसरे दिन उदयतिथि के रूप में उपलब्द अष्टमी के दिन व्रत रखते हैं।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के तत्वावधान में दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के तत्वावधान में 27 जनवरी 2023 को टैगोर थिएटर, तिरुवनंतपुरम में दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुवनतंपुरम (कार्यालय-2) के संयोजक कार्यालय होने के उपलक्ष्य में राजभाषा सम्मेलन के आयोजन के लिए इस कार्यालय द्वारा आवश्यक सहयोग एवं समर्थन प्रदान किए गए। दिनांक 24.01.2023 को इस कार्यालय के कान्फ्रेंस हॉल में राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा उक्त सम्मेलन से संबंधित प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया।

27.01.2023 को पूर्वाह्न 10.00 बजे टैगोर थिएटर, तिरुवनंतपुरम में आयोजित सम्मेलन में केरल के माननीय राज्यपाल महोदय **श्री आरिफ मुहम्मद खान जी**, केंद्रीय गृह राज्य मंत्री **श्री अजय कुमार मिश्रा जी**, सचिव राजभाषा **श्रीमती अंशुली आर्य जी**, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल एवं अध्यक्षा, नराकास, तिरुवनंतपुरम (कार्यलय-2) **श्रीमती जी सुधर्मिनी जी** एवं संयुक्त सचिव, राजभाषा **श्रीमती (डॉ) मीनाक्षी जौली जी** मंच पर उपस्थित रहे। उक्त सम्मेलन में राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ-साथ केरल, तमिल नाडु, पुदुच्चेरी, लक्षद्वीप, कर्णाटक एवं आंध्र प्रदेश के केंद्र सरकारी कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारी-गण और राजभाषा कार्मिकों ने भाग लिया।

पूर्वाह्न 09.30 बजे प्रतिभागियों द्वारा पंजीकरण किया गया। 10.00 बजे सी-डैक द्वारा **कंठस्थ 2.0** पर प्रस्तुतीकरण दिया गया। तदुपरांत सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), कोच्चि क्षेत्र एवं सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), बेंगलूरु क्षेत्र द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों के राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन संबंधी ब्यौरे प्रस्तुत किए गए। 11.00 बजे मुख्य अतिथियों का आगमन हुआ। केरल के माननीय राज्यपाल महोदय द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके सम्मेलन का उद्घाटन किया गया। तदुपरांत मंचासीन अतिथियों का स्वागत किया गया। सचिव, राजभाषा विभाग द्वारा स्वागत भाषण एवं संबोधन के पश्चात् माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री अजय कुमार मिश्रा जी द्वारा सभा को संबंधित किया गया। इसके बाद मंचासीन अतिथियों द्वारा दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों के लिए राजभाषा पुरस्कारों का वितरण किया गया। पुरस्कार वितरण के बाद माननीय राज्यपाल महोदय श्री आरिफ मुहम्मद खान जी ने सभा को संबोधित किया। संयुक्त सचिव, राजभाषा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के बाद राष्ट्रगान के साथ सम्मेलन संपन्न हुआ।

राजभाषा सम्मेलन की झलकियां

मंचासीन अतिथि गण: (1) श्रीमती जी सुधर्मिनी, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल एवं अध्यक्षा, नराकास, तिरुवनंतपुरम (कार्यलय-2), (2) श्रीमती अंशुली आर्य, सचिव राजभाषा, (3) श्री आरिफ मुहम्मद खान, केरल के माननीय राज्यपाल, (4) श्री अजय कुमार मिश्रा, केंद्रीय गृह राज्य मंत्री, (5) श्रीमती (डॉ) मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव, राजभाषा

श्री अजय कुमार मिश्रा, केंद्रीय गृह राज्य मंत्री द्वारा संबोधन

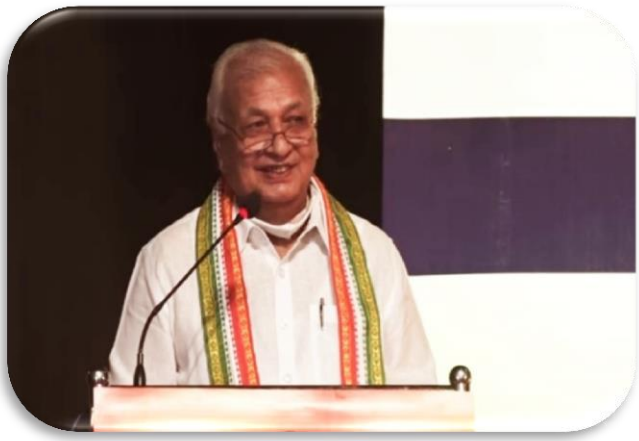

श्री आरिफ मुहम्मद खान, केरल के माननीय राज्यपाल द्वारा संबोधन

वर्ष 2021-2022 के दौरान मूल कार्य हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना के तहत पुरस्कार प्राप्त अधिकारी

प्रथम पुरस्कार
श्रीमती आर कमला
सहायक लेखा अधिकारी

द्वितीय पुरस्कार
श्रीमती आर विजया
सहायक लेखा अधिकारी

द्वितीय पुरस्कार
श्रीमती आर एस ब्रिंदा
सहायक लेखा अधिकारी

प्रोत्साहन पुरस्कार
श्री कुमार शैलेश
वरिष्ठ लेखाकार

देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका.....

सुमित कुमार
लेखाकार

'हिंदी' हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक है। पिछले कई वर्षों में हिंदी भाषा का एक से अधिक दृष्टियों में विकास हुआ है। राष्ट्रभाषा के रूप में तो इसका विकास हो ही रहा है, लेकिन विशेष प्रयोजनों में भी इसका प्रयोग किया जा रहा है। कामकाजी भाषा के रूप में भी इसका उपयोग काफी हद तक बढ़ गया है। फिर भी अंग्रेज़ी का वर्चस्व पूरी तरह से समाप्त करने के लिए सरकार और देश के नागरिकों को मिलकर काम करना होगा। इसके लिए सतत प्रयास करते रहना होगा।

सरकारी कामकाजों में हिंदी को बढावा देने के लिए सरकार प्रत्येक वर्ष प्रोत्साहन राशि भी देती है। कई तरह के समारोहों का आयोजन भी किए जाते हैं।

उत्तर भारत के हिस्सों में हिंदी भाषा-भाषियों की भूमिका काफी अच्छी है, लेकिन दक्षिण भारत में हिंदी को लेकर उत्सुकता कम है। स्थानीय भाषा का वर्चस्व और अंग्रेज़ी, दो भाषाएँ ज़्यादा इस्तेमाल होती है। सरकार को इन क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है।

चूँकि भाषा राष्ट्रीय चेतना का अनिवार्य अंग होती है, वह मनुष्य के विचारों को ही अभिव्यक्त नहीं करती बल्कि देश के संगठित रूप का भी बोध कराती है। हिंदी देश की राष्ट्रीय भाषा होने के बावजूद भी लगभग 40 प्रतिशत आबादी इस भाषा से वंचित है। भारत जैसे बहुजातीय, बहुवर्गीय देश में, जिसे रवींद्र नाथ टैगोर ने "महा मानव समुद्र" कहा है, एकमात्र हिंदी ही एकता का प्रतीक है।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के समय भी अंग्रेज़ी का बहिष्कार हो रहा था ताकि हिंदी भाषा कमजोर न पड़ने लगे। इस आंदोलन से सांस्कृतिक विकास को काफ़ी हद तक गति मिली थी।

हिंदी के कई विशेषज्ञ इसे राष्ट्रीय सम्मिलन की एकमात्र शक्ति मानते थे। एक हिंदी विशेषज्ञ ने कहा था कि यह समस्त भारत की भाषा है।

'प्रगतिवाद' के आंदोलन ने हिंदी के सांस्कृतिक विकास को एक नई दिशा प्रदान की। प्रगतिवाद एक विशिष्ट जीवन दर्शन है जो समाज के विकासशील तत्वों को विविध अंतर्विरोधों से उत्पन्न मानता है। भारत के कई महान हिंदी साहित्यकार जैसे – प्रेमचंद, महादेवी वर्मा आदि ने अपने-अपने समय में हिंदी के सांस्कृतिक विकास में काफी अधिक योगदान दिया है जो सराहनीय है।

हमारी वर्तमान सरकार भी हिंदी के सांस्कृतिक विकास के लिए देश-विदेश में प्रचार-प्रसार कर रही है। कई सम्मेलनों में भी देश के प्रधानमंत्री हिंदी में ही भाषण देते हैं। अतः देश के सांस्कृतिक विकास और विस्तार में हिंदी साहित्यकारों और कुछ आंदोलनकारियों की अहम भूमिका रही है।

देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका

शांति के
सहायक लेखा अधिकारी

भारत विविधताओं का देश है। यहाँ कई तरह की भाषाएँ बोलनेवाले, विभिन्न रहन-सहन, वेष-विधान और अनेक संस्कृति के लोग रहते हैं। इन सब विविधताओं को जोड़कर एकता लाने वाला माध्यम है हिंदी। देश के हरेक कोने में अपनी स्थानीय भाषा के अतिरिक्त जिस भाषा का आमतौर पर प्रयोग किया जाता है, वह है हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी।

भारत में अनेक संस्कृति के लोग रहते हैं। दुनिया में ऐसा कोई देश नहीं होगा जहाँ इतनी विभिन्न संस्कृति के लोग रहते हैं। भारत की विविध संस्कृतियाँ इतना संपन्न है कि देश-विदेश के लोग इसके बारे में जानने और पहचानने में बहुत उत्सुक रहते हैं और इसमें जिज्ञासा प्रकट करते हैं। हम भारतवासी गर्व से कह सकते हैं कि हम इस संस्कृति संपन्न देश का अमूल्य हिस्सा हैं।

हमारी संस्कृति के विकास के लिए हमें नई कदम उठाने चाहिए। हमारे सरकार की ओर से इस दिशा में प्रयास हो रहा है। इसका संरक्षण करना चाहिए और इसको बढ़ावा दिया जाना चाहिए। हमारी संस्कृति हमारी पहचान है। हिंदी एक ऐसी भाषा है जो हमारी संस्कृति को जोडने का काम करती है। हिंदी एक ऐसी भाषा है जो सब लोग समझ सकते हैं, और आम आदमी की एक पहचान है। हिंदी हमारी सांस्कृतिक विस्तार के लिए एक प्रमुख भूमिका निभाती है। देश के सभी लोग जो विविध संस्कृतियों का हिस्सा है, हिंदी के माध्यम से अपने विचार प्रकट करते हैं। भारत के विविध प्रदेशों की सांस्कृतिक एकता के लिए हिंदी सहायक है। देश में अनेक सांस्कृतिक संस्थाएँ है जो अपने देश की सांस्कृतिक विकास के लिए काम करते हैं। हिंदी इन संस्थाओं को एक छत के नीचे ले आती है। हरेक आदमी को अपनी संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए अपनी ओर से पूरी कोशिश करनी चाहिए। अपनी संस्कृति को कायम रखना और उसका विकास करना हमारा धर्म है।

भारत की पुरानी संस्कृति की खूबसूरती का हम अनुमान भी नहीं लगा सकते हैं। समस्त दुनिया हमारी सांस्कृतिक संपन्नता से चकित है। हिंदी का ज़्यादा से ज़्यादा इस्तेमाल और प्रचार से हमारा सांस्कृतिक विकास

हो सकता है। विभिन्न संस्कृतियों के मिलन के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होना चाहिए, जहाँ देश के सब लोग अन्य प्रदेशों की सांस्कृतिक संपन्नता से परिचित हो सकें। हिंदी के माध्यम से इस सांस्कृतिक मिलन को एक नया रूप मिलेगा। हिंदी के विकास और प्रचार से हमारा सांस्कृतिक विस्तार ही नहीं, अन्य कई क्षेत्रों में भी विकास हो सकता है। हिंदी एक ऐसी भाषा है जो हमें यह एहसास दिलाती है कि हम भारतीय हैं और हम इस महान भूमि का एक हिस्सा है। भारत की संस्कृति इतनी रंगीन और खूबसूरत है कि हम अपनी संस्कृति को कभी छोड़ या भूल नहीं सकते। मगर इसके विकास और प्रचार के लिए हमें अपनी तरफ से पूरे लगन से मेहनत करना होगा।

हिंदी एक अनमोल बंधन है जो हमें जोड़ती है और इन विविधताओं के बीच हमें जोड़कर एक बनाकर खड़ा करती है। देश भर में अनेक सांस्कृतिक संस्थाओं और कार्यालयों में हिंदी के माध्यम से विचार-विनिमय किया जाता है। भारत की भाषा हिंदी है और जो हमारे सांस्कृतिक विस्तार के लिए एक अमूल्य माध्यम है। हम गर्व से यह कह सकते हैं कि हम भारतीय है, हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी है, हमारी संस्कृति अनोखी, संपन्न और खूबसूरत है। हर एक भारतीय का यह कर्तव्य है कि हमें अपनी संस्कृति को छोड़कर विदेशी संस्कृति से आकृष्ट नहीं होना चाहिए। अपनी संस्कृति को भूलकर अक्सर नई पीढी पश्चिमी संस्कृति की ओर चलते हैं। जबकि विदेशी लोग हमारी संस्कृति को पहचानकर हमारी संस्कृति को अपनाने का प्रयास करते हैं। हमारी नई पीढ़ी को अपने देश की संपन्न संस्कृति की ओर जागरूक करके अपनी संस्कृति के विकास की ओर आकृष्ट कराना होगा। हमारे स्कूलों और कॉलेजों से इसका आरंभ करना होगा। हिंदी के प्रचार और विकास से सांस्कृतिक विकास भी अपने आप संभव होगा।

हिंदी एक ऐसा माध्यम है जो किसी भी देश में जब बोली जाती है, तो हमें यह एहसास दिलाती है कि हम भारतीय हैं, न कि हम किस राज्य से हैं।

"जय हिंदी! जय भारत !"

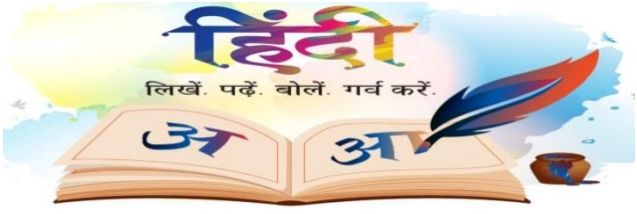

देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका

डेयिसम्मा राजू
सहायक पर्यवेक्षक

भारत सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता की जगह होने के कारण हिंदी भाषा एक एकीकृत सूत्र है जो विभिन्न क्षेत्रों और इलाकों को एक साथ जोड़ती हैं। हिंदी भारत की जनता द्वारा बोली और समझी जानेवाली भाषा है और विचारों के प्रभावी आदान-प्रदान के लिए हिंदी जानना बहुत महत्वपूर्ण है। ऐतिहासिक रूप से हिंदी सांस्कृतिक विस्तार में भी एक विशेष स्थान रखती है, क्योंकि इस भाषा का उपयोग जनता से जुडने और लोगों की सहज भारतीयता प्रकट करने के लिए किया जाता था। हमें इस भाषा को सीखना और इसका सम्मान करना चाहिए, जिसका भारतीय इतिहास से गहरा संबंध है और हमारी संस्कृति से बहुत अधिक मिली-जुली है। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी एक दूसरे को जोड़ने का काम करती है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की स्वीकार्यता बढी है। इसके केंद्र में "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा है। हिंदी हमारे सांस्कृतिक विस्तार की एक ऐसी मजबूत कड़ी है, जिसके द्वारा ही हम अपनी पहचान स्थापित करते हुए विश्व को अपनी तरफ आकर्षित कर सकते हैं।

हिंदी की देवनागरी लिपी वैज्ञानिक है। इसे हम जैसा बोलते हैं वैसा ही लिखते हैं। इसमें कोई भी बनावटीपन नहीं, परंतु यह बहुत ही सरल, सहज और आत्मीय भाषा है।

हिंदी हमारे बोलचाल का माध्यम ही नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति की पहचान, आत्मा और एकता के सूत्र के रूप में भी जानी जाती है। आज़ादी के आंदोलन को एकता में पिरोने में हिंदी भाषा का महत्वपूर्ण योगदान था। आज पूरे विश्व में हिंदी भाषा का डंका बज रहा है। चीनी भाषा के बाद दूसरे स्थान पर विश्व में हिंदी है। मातृभाषा के बिना उन्नति की कल्पना नहीं की जा सकती।

देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका

एम टी विजयन
सहायक लेखा अधिकारी

भारत एक ऐसा महान देश है जिसकी सांस्कृतिक विरासत 5000 साल से भी अधिक पुराना है। भारत के अधिकांश लोगों द्वारा बोली जानेवाली भाषा है, हिंदी। उत्तर भारत के सभी लोग हिंदी बोलते हैं, दक्षिण भारत के आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक राज्यों के लोग भी हिंदी जानते हैं।

उत्तर भारत में करीब 1000 वर्ष के पहले मुगल आदि वंश के राजाओं ने भारत में आकर अपने साम्राज्य बनाए। इनमें बाबर, इब्राहिम लोदी आदि प्रमुख हैं। अकबर की राजधानी में कई विद्वान लोग और तानसेन जैसे संगीतज्ञ आदि ने विज्ञान, भारतीय संगीत आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय काम किया।

उसके बाद सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में भक्ति संगीत का काल आया। तुलसीदास, जो रामचरित मानस के रचयिता हैं, जैसे विद्वान लोगों ने हिंदी भाषा की उन्नति और प्रगति के लिए सराहनीय योगदान किया है। इस तरह इन महान लोगों की रचनाओं से हिंदी साहित्य का और साथ ही साथ हमारी संस्कृति का विकास हुआ। इन विद्वान लोगों और कवियों के प्रयत्न से हमारी भाषा हिंदी और उसके द्वारा हमारी संस्कृति मज़बूत हुई।

भक्तिकाल के बाद, मुंशी प्रेमचंद, सुमित्रानंदन पंत, मैथिली शरण गुप्त आदि महान साहित्यकारों के कार्य से हिंदी साहित्य का और उसके द्वारा हमारी संस्कृति का विकास हुआ।

स्वतंत्रता संग्राम के समय में देशप्रेम से प्रेरित होकर कई साहित्यकारों, कवियों और नेताओं ने हिंदी और उसके द्वारा हमारी संस्कृति के विस्तार के लिए उल्लेखनीय योगदान किया।

इस प्रकार हमारी संस्कृति के विस्तार के लिए हिंदी भाषा की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण रही है।

एकता

शांति के
सहायक लेखा अधिकारी

राजू और गीता अपने बेटे के साथ राजू की माँ-बाप के घर में पिछले दस साल से रहते थे। गीता को हमेशा यह शिकायत रहती थी कि वहाँ उन्हें कोई स्वतंत्रता नहीं मिलती। अपने सास-ससुर को नीचा दिखाने में वह कोई कसर नहीं छोड़ती थी। ससुरजी बच्चे को स्कूल ले जाया करते थे और सासू माँ खाना पकाकर गीता और राजू को ऑफिल ले जाने के लिए उनकी टिफिन तैयार रखती। गीता और राजू सुबह देर से ही उठा करते थे। माँ का बनाया खाना मनभर कर खा भी लेते और ऑफिस के लिए भी ले जाया करते थे। लेकिन, फिर भी गीता को माँ से यह शिकायत रहती थी कि माँ भोजन समय पर तैयार नहीं करती, और उन्हें खाने के लिए क्षणों तक इंतज़ार भी करना पड़ता था। रोज़ कोई-न-कोई बहाना ढूढ निकालकर झगड़ा शुरु कर देती थी। बेचारे राजू के माता-पिता सब कुछ सुनकर चुपचाप खड़े रहते थे। वे तो गीता को अपनी बेटी की तरह ही प्यार किया करते थे।

एक दिन गीता देर से घर लौटी, तो ससुर जी ने गीता से पूछा - 'बेटी इतनी देरी होती, तो तुम मुझे बुला लेती, मैं तुम्हें लेने आ जाता। देर से आना लड़कियों के लिए अनजान जगहों में ख़तरा है'। पिताजी के इस सवाल पर गीता नाराज़ हो गई और इसे बहाना बनाकर उसने राजू से घर बदलने की बात की। राजू अपनी पत्नी की बातों में आकर अपने माँ-बाप को छोड़कर जल्द ही एक नया घर ले लिया और गीता अपने पति और बच्चे को लेकर नए घर चली गई। गीता मन-ही-मन सोचने लगी कि - "अब मैं अपनी मन-मानी से रह सकती हूँ, देर से घर लौट सकती हूँ, मुझे पूछनेवाला कोई नहीं, अपनी इच्छा से खुश रह सकती हूँ। इतने दिनों के बाद अब मैं खुश हूँ।"

शुरु में सब ठीक था। लेकिन धीरे-धीरे गीता को घर के सारे काम अकेले करना पड़ा, खाना बनाना, बच्चे को स्कूल के लिए तैयार करना, झाड़ू-पोंछा करना, ऑफिस के लिए तैयार होना इत्यादि। राजू भी इतना व्यस्त था कि उसके पास गीता की सहायता करने के लिए वक्त निकालना मुश्किल हो गया। वह अपने ऑफिस के काम में पूरी तरह व्यस्त था। इस बीच राजू के मुँह से अक्सर यह निकल जाता कि "काश माँ यहाँ होती तो मुझे स्वादिष्ट भोजन खिलाती, यह तो भोजन के नाम पर कुछ फालतू की चीज़े बनाकर रखी हैं।" राजू के इन बातों से गीता बहुत दुखी हो गई। एक दिन गीता बीमार पड़ गयी। दवाई लाने के लिए

राजू से कहा, तो उन्होंने कहा कि "मुझे ज़रूरी मीटिंग है, मैं अभी आ नहीं सकता"। गीता को पूछनेवाला कोई नहीं था। वह मन ही मन सोचने लगी, "घर में होती तो माँ सब कुछ बनाती और ससुर दवाई ले आता"। अब हकीकत सामने आने लगी। फिर भी ज़िद्द करके घर में बुखार में तपती पड़ी रही। बाहर से खाना मँगवाया। वह भी हमेशा पेट के लिए ठीक नहीं रहता। दूसरे दिन स्कूल छूटने पर बच्चे को वापस घर लाना था। राजू और गीता के पास बच्चे को घर लाने के लिए वक्त ही नहीं था। लंबे झगड़े के बाद जब गीता स्कूल पहुँची तो अपने बच्चे को वहाँ कहीं भी देखी नहीं। उसने परेशान होकर राजू को फोन किया। दोनों चिंतित हो गए। जब वे घर पहुँचे तो बच्चा घर भी नहीं पहुँचा था। तब राजू को पिताजी का फोन आया कि बच्चा उनके घर पहुँच गया है और उनको वहाँ आने के लिए भी बोला गया। दोनों पति-पत्नी जल्दी से अपने माता-पिता के घर पहुँच गए। उन दोनों से पिताजी ने कहा- " आप लोग खुश रहने के लिए इस घर से अलग हो गए थे, इसलिए मैंने भी तुम लोगों को जाने से मना नहीं किया। लेकिन तुम लोग इतने लापरवाह कैसे रह सकते हैं ? आज यह बच्चा हमारे घर आ गया तो ठीक हुआ, नहीं तो तुम लोग क्या करते ? ज़िंदगी की भाग-दौड़ में लापरवाही बहुत महँगा पड़ जाता है"। गीता यह सुनकर रोने लगी। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने तुरंत अपने सास-ससुर से माफ़ी माँगी और कहने लगी "माँ जी, पिताजी, आप लोगों ने मुझे अपनी बेटी की तरह प्यार किया। माँ सारे काम में मेरा हाथ बंटाया करती थी तो पिताजी ने मेरे बच्चे को स्कूल छोड़ने और वापस बुलाने की जिम्मेदारी भी उठा ली। घर की सारी जिम्मेदारियों को आप लोगों ने खुशी-खुशी अपने कंधों पर ले ली। इतना सब कुछ करने के वाबजूद मैं आप लोगों का सदा अपमान करती रही। माँ जी, पिताजी, मैं आप दोनों से क्षमा माँगने योग्य नहीं हूँ, फिर भी हो सके तो, मुझे अपनी बेटी समझकर माफ़ कर देना।" गीता की इन बातों को सुनकर ससुर जी ने कहा -"बेटी, अलग रहना तो गलत बात नहीं है, लेकिन इसमें खुशी-खुशी जिम्मेदारी निभाने का फर्ज भी होता है। जिस ज़िंदगी में झगड़ा ही झगड़ा हो, उस ज़िदगी में क्या खुशी है"। राजू और गीता को यह बात ठीक लगा और किराए का घर को छोड़कर वे वापस अपने माता-पिता के घर आ गए। इसपर बच्चा बहुत खुश हो गया था क्योंकि अब से वह दादा-दादी के पास रह सकता है, उनसे ढ़ेर सारे कहानियाँ सुन सकता है, दादा-दादी के साथ बाहर घूमने भी जा सकता है। राजू के माता-पिता भी मन-ही-मन खुश हो गए।

राजू और गीता अब समझ गए कि अपने माता-पिता के साथ रहना कितना सुरक्षित और अच्छा है। समय बीतता गया। गीता भी बदल गई। अब वह सुबह उठकर अपनी सास की मदद करती। घर में झगड़े के बदले प्यार का माहौल हो गया। परिवार के सब लोग जब एक साथ रहें तो आपसी प्रेम और सहयोग बने रहेंगे। राजू और गीता को **एकता** के बल का एहसास हो गया।

एकता

रमा टी एम

सहायक लेखा अधिकारी

रामपुर नामक गाँव का पंचायत अध्यक्ष था रामप्रसाद। पंचायत के सदस्यों के बीच रोज़ कुछ न कुछ बातों को लेकर झगड़ा तो होता ही रहता था। इस बात को लेकर रामप्रसाद बहुत उदास रहता था। "अगर सदस्यों के बीच आपसी सहयोग और एकता नहीं होगा तो हमारे गाँव के विकास एवं सुधार के लिए कैसे काम कर सकेंगे। एक चर्चा गाँव के बारे में शुरु होगी, तभी सदस्य आपस में बहस करने लगेंगे और कई बार वह बहस मारपीट तक बढ़ जाती है"। रामप्रसाद खिन्न होकर सोचने लगा। "इस बारे में मुझे कुछ तो ज़रूर करना पड़ेगा, नहीं तो हमारे गाँव के प्रति कोई कार्य करने के लिए यह पंचायत सक्षम नहीं रहेगी"। बहुत समय सोचने के बाद, रामप्रसाद के मन में एक विचार आया। उसके बारे में सोचते-सोचते बेचारा नींद में डूब गया। आखिर समय तो रात के बारह बज गये थे।

अगला दिन रामप्रसाद जल्दी उठ गया। उसके मन में रात के उपाय के बारे में विचार आ रहा था। सभी प्रभात दिनचर्या पूरा करके जल्दी पंचायत पहुँच गया। धीरे-धीरे सदस्य सभी उपस्थित हुए। उसने सभी सदस्यों को अपने पास बुलाया और कहा- "रोज़ तो हम औपचारिक कामकाज में जुड़ जाते हैं, मगर आज हम एक खेल खेलेंगे। कृपया कोई भी इनकार नहीं करेगा और न ही इसका विरोध करेगा"। यह कहने के पश्चात रामप्रसाद कुछ हवा भरे हुए गुब्बारे लाये। सभी सदस्यों को एक-एक गुब्बारा दिया और कहा- "अब सभी सदस्य अपने गुब्बारे के ऊपर अपना नाम लिखेंगे और मुझे गुब्बारा वापस करेंगे"। कई सदस्यों ने सोचा-"यह कैसा खेल है, बूढ़ा पागल तो नहीं हो गया?" हालाँकि सभी सदस्यों ने रामप्रसाद के आदेश का पालन किया और अपने-अपने गुब्बारों में नाम लिखकर वापस किया। अब रामप्रसाद बोला- "सभी बाहर जाकर खड़े हो जाएँ।" गुस्से में कुछ बड़बड़ाहट के साथ सभी बाहर चले गए।

दस मिनट के बाद रामप्रसाद ने सबको अंदर वापस बुलाया और कहा- "मैंने आपके दिए हुए गुब्बारों के साथ कुछ और फुले हुए गुब्बारे डाल दिए हैं, जिसमें कुछ नहीं लिखा है। आप लोग सभी इसमें से अपने-अपने नामवाले गुब्बारे खोजकर निकालेंगे और मुझे वापस करेंगे। मगर ध्यान रहे एक भी गुब्बारा टूटना नहीं है"।

सभी सदस्य हक्का-बक्का रह गए। "इस कमरे के अंदर तो इतने सार गुब्बारे डाल दिए गए हैं। इसमें से कैसे ढूँढ़ेंगे"। यह सोचते-सोचते सभी सदस्य दिए हुए काम में जुट गए। मगर कोई भी अपने नाम का गुब्बारा ढूँढ़ नहीं सका। तब रामप्रसाद बोला- " इस खेल में मैं एक परिवर्तन प्रस्तुत करता हूँ। हर कोई कुछ-न-कुछ लिखा हुआ गुब्बारा अपने हाथ में लेगा और जिसका नाम उस गुब्बारे में लिखा होगा, उस सदस्य को वह गुब्बारा दे देगा"। अब तो काम बहुत आसान हो गया। कुछ ही समय में अपने नामवाला गुब्बारा सभी सदस्यों के पास आ गया। सभी खुश हो गए।

अब रामप्रसाद ने कहा - " दोस्तों आपने देखा न आपसी सहयोग और एकता का जादू ! जब आप सब अपना-अपना नाम खोज रहे थे तो कोई भी विजयी नहीं हुआ, मगर जब आप सब एक साथ एक काम में लग गए, वह भी अपने नामवाले गुब्बारे को भूलकर और किसी और के गुब्बारे को ढूँढ़कर और उसे उसके मालिक को वापस करके, तब वह काम कितना आसान हो गया। यह है आपसी सहयोग और एकता की शक्ति"। यह सुनकर सभी सदस्य चकित रह गए। कई सदस्य सोचने लगे, "अगर हम अपने अहंकार और स्वार्थपरता छोड़कर इस गाँव के विकास के लिए काम करने लगेंगे तो इस तरह का जादू फिर से कर पाएँगे और हमारे गाँव की आनेवाली पीढ़ी हमारे काम को सराहेंगे"। उस दिन से रामपुर गाँव में बहुत सुधार होने लगा। ऐसा नहीं कि उस गाँव में कुछ दोष नहीं है, मगर पहले से ज़्यादा सुधार आ गया और दिन व दिन यह बढ़ता गया। एक दिन रामपुर एक आदर्श गाँव होगा, ज़रूर .....

वर्ष 2022-2023 के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से संबंधित कार्यों का संक्षिप्त विवरण

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2022 : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) एवं प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) के कार्यालय, तिरुवनंतपुरम के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 14.09.2022 को हिंदी दिवस का पालन किया गया और 14.09.2022 से 29.09.2022 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया । इस अवसर पर अधिकारियो/कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । दिनांक 23.09.2022 को अधिकारियों के लिए "राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम" का आयोजन किया गया।

हिंदी पत्रिका "श्रुति" का प्रकाशन : कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के वर्ष 2021-22 से संबंधित दो अंकों (29वें एवं 30वें) के ई-संस्करणों का प्रकाशन किया गया।

हिंदी कार्यशाला : वर्ष 2022-23 के दौरान प्रधान कार्यालय एवं शाखा कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए निम्नानुसार ऑनलाइन हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

वर्ष 2022-2023 के दौरान आयोजित हिंदी कार्यशालाएं	प्रशिक्षित कार्मिकों की कुल संख्या (प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम)	
	अधिकारी	कर्मचारी
1	2	3
(1) 27.06.2022	04	42
(2) 23.09.2022	22	00
(3) 22.12.2022	02	34
(4) 23.03.2023	02	29
कुल	**30**	**105**

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुवनंतपुरम (कार्यालय-2)

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुवनंतपुरम (कार्यालय-2) के कार्यकलापों का संयोजन प्रधान महालेखाकार (ले व ह), केरल का प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम द्वारा किया जा रहा है। तिरुवनंतपुरम नगर के 45 केंद्र सरकारी कार्यालय इस समिति के सदस्य हैं।

समिति की छमाही बैठकें : समिति के वर्ष 2022-23 से संबंधित दो छमाही बैठकें श्रीमती जी सुधर्मिनी, प्रधान महालेखाकार की अध्यक्षता में दिनांक 22.06.2022 एवं 23.11.2022 को ऑनलाइन माध्यम से आयोजित की गई।

संयुक्त राजभाषा उत्सव : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुवनंतपुरम (कार्यालय-2) के तत्वावधान में "संयुक्त राजभाषा उत्सव 2022-23" के सिलसिले में 13.12.2022 से 16.12.2022 तक सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए ऑनलाइन माध्यम से विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। 25.08.2022 को नराकास राजभाषा पुरस्कार योजना के अधीन राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्य निष्पादन, हिंदी में मूल काम करने के लिए नराकास विशेष प्रोत्साहन योजना और सदस्य कार्यालयों से प्रकाशित उत्तम हिंदी पत्रिकाओं के लिए **नराकास राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह** आयोजित किया गया।

नराकास ई-पत्रिका का प्रकाशन : नराकास ई-पत्रिका **"अनंतवाणी"** के तीसरे अंक का प्रकाशन किया गया।

परिसंवाद : 13.12.2022 को पूर्वाह्न 10.30 से अपराह्न 12.30 बजे तक नराकास के सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए **"भारत सरकार की राजभाषा नीति और उसके कार्यन्वयन"** पर **परिसंवाद** का आयोजन किया गया।

27.01.2023 को तिरुवनंतपुरम में दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुवनतंपुरम (कार्यालय-2) के संयोजक कार्यालय होने के उपलक्ष्य में 27.01.2023 को तिरुवनंतपुरम में आयोजित दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के आयोजन के लिए इस कार्यालय द्वारा आवश्यक सहयोग एवं समर्थन प्रदान किया गया। दिनांक 24.01.2023 को इस कार्यालय के कान्फ्रेंस हॉल में उक्त सम्मेलन से संबंधित प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया।

27.01.2023 को पूर्वाह्न 10.00 बजे टैगोर थिएटर, तिरुवनंतपुरम में आयोजित सम्मेलन में केरल के माननीय राज्यपाल महोदय श्री आरिफ मुहम्मद खान जी, केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा जी, सचिव राजभाषा श्रीमती अंशुली आर्य जी, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल श्रीमती जी सुधर्मिनी जी एवं संयुक्त सचिव, राजभाषा श्रीमती (डॉ) मीनाक्षी जौली जी मंच पर उपस्थित रहे। उक्त सम्मेलन में राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ-साथ केरल, तमिल नाडु, पुदुच्चेरी, लक्षद्वीप, कर्णाटक एवं आंध्र प्रदेश के केंद्र सरकारी कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारी-गण और राजभाषा कार्मिकों ने भाग लिया।

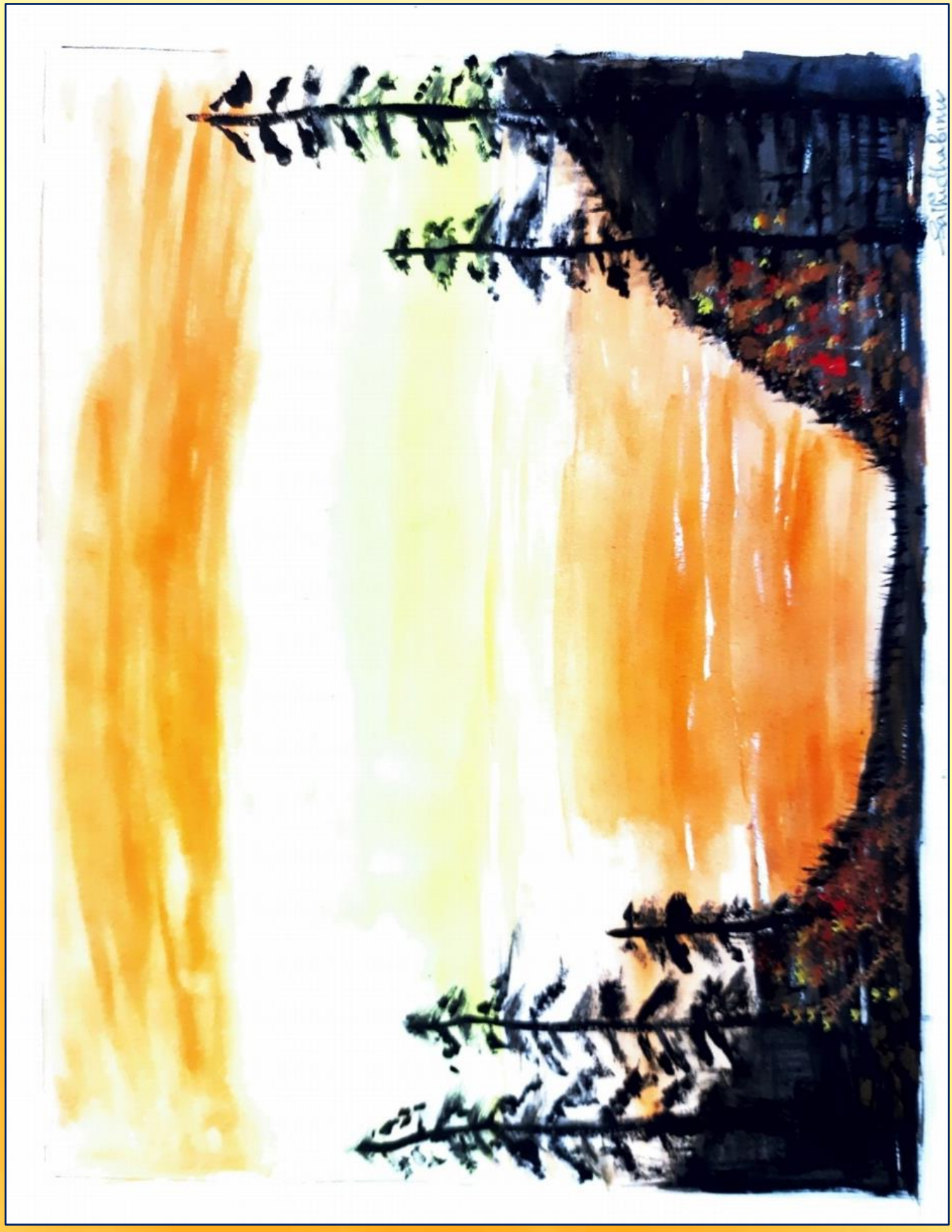

चित्रकार

श्रीमती सतिधा, लेखाकार

कार्यालय की कला-साहित्यिक प्रतिभा – श्रीमती जेसिंथा मोरिस

श्रीमती जेसिंथा मोरिस इस कार्यालय में सहायक पर्यवेक्षक के रूप में कार्यरत हैं। वे 24.04.1987 को इस कार्यालय में शामिल हुई थी। उन्होंने 36 साल की सेवा पूरी कर ली है। वे अप्रैल 2024 में सेवानिवृत्त होने वाली हैं। वे प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल के कार्यालय की पहली महिला कल्याण सहायक थीं। उनका कहना है कि सेवानिवृत्ति के बाद संजोने के लिए उनके पास कई सुनहरी यादें हैं।

श्रीमती जेसिंथा मोरिस साहित्य और कला के क्षेत्र का चमकता सितारा भी हैं। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक यह है कि उन्होंने कविताओं, लघु कथाओं, उपन्यास, अनुभवों और अनुवाद सहित 15 पुस्तकों की रचना की हैं। शारजाह अंतरराष्ट्रीय पुस्तक उत्सव में उनकी दो किताबों का विमोचन किया गया। दिलचस्प बात यह है कि दो पुस्तकों में हिंदी, मलयालम और अंग्रेजी में कविताओं का संग्रह शामिल है, जिसका शीर्षक है "वन वॉयस थ्री स्ट्रीम एंड ए कॉन्फ्लुएंस" (ONE VOICE THREE STREAMS AND A CONFLUENCE) और "बहुसुरभी"। उनकी हिंदी कविताओं में महात्मा गांधी और चाचा नेहरू को श्रद्धांजलि और समाज में व्याप्त बुराई और अन्याय के खिलाफ आंखें खोलने वाली अन्य कविताएँ शामिल हैं। "बहुसुरभी" का प्रकाशन प्रधान महालेखाकार श्री को.प. आनंद द्वारा किया गया था।

जेसिंथा का कहना है कि हालांकि उनकी प्रारंभिक शिक्षा बैंगलोर में हुई थी और स्नातक स्तर की पढ़ाई तक हिंदी को अपनी दूसरी भाषा के रूप में जारी रखा, लेकिन वह हिंदी भाषा में अपना प्रवाह बनाए रखने में सक्षम थीं क्योंकि कार्यालय के हिंदी कक्ष के साथ उनका घनिष्ठ संबंध था। वे कई वर्षों से लगातार हिंदी कार्यशालाओं और हिंदी पखवाड़ा समारोह में भाग लेती थीं। उन्होंने हिंदी कक्ष द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार भी जीते हैं।

जेसिंथा गर्व से कहती हैं कि उन्हें लेखन में अपनी रचनात्मकता बढ़ाने के लिए विभाग के सभी उच्च अधिकारियों से पूर्ण समर्थन मिला है। उन्होंने 1994 के दौरान लिखना शुरू किया जब श्री जेम्स के जोसेफ महालेखाकार थे, पूर्व महालेखाकार श्री वी कुरियन ने उनकी पहली पुस्तक, बीड्स ऑफ विजडम

(अंग्रेजी कविताओं का संग्रह) का विमोचन किया था जिसमें उन्होंने प्रशंसात्मक शब्द भी लिखे हैं। पूर्व महालेखाकार श्री वी रवींद्रन ने उनकी एक पुस्तक का विमोचन किया है और पूर्व महालेखाकार श्रीमती महालक्ष्मी मेनोन ने दूसरी पुस्तक के लिए प्रस्तावना लिखी थी। पूर्व उप महालेखाकार श्री राजेश सिंह और श्री अजायब सिंह ने भी लेखन के क्षेत्र में उन्हें पूरा सहयोग दिया था। वर्तमान में प्रधान महालेखाकार श्रीमती सुधार्मिनी ने भी उनकी सभी रचनात्मक प्रयासों में सफलता का आशीर्वाद दिया है। उनकी सेवाकालीन अनुभवों पर आधारित मलयालय में रचित किताब 'स्पंदनंगल' के लिए वरिष्ठ उप महालेखाकार श्री बिजू जोसफ द्वारा ब्लर्ब लिखा गया था।

सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उन्हें भारत के पूर्व नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री विनोद राय से दो बार और श्री शशि कांत शर्मा से एक बार स्वर्ण प्रतीक के साथ प्रशंसा पत्र मिले थे, जब उन्होंने उन्हें अपनी पुस्तकें प्रस्तुत की थीं।

अपने लेखन कौशल के साथ-साथ जेसिंथा एक अच्छी मनोरंजक भी हैं और संगीत, नृत्य और अभिनय के क्षेत्र में सक्रियता से भाग लेती हैं। उन्होंने कई लघु फिल्में और संगीत एल्बम जारी किए हैं और 65 से अधिक पुरस्कार भी जीते हैं।

श्रीमती जेसिंथा मोरिस को उनके सभी रचनात्मक कार्यों के लिए बधाई और उनके भविष्य के प्रयासों की सफलता के लिए शुभकामनाएँ।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

01.10.2022 से 31.03.2023 तक की अवधि के दौरान सेवानिवृत्त अधिकारियों /कर्मचारियों की सूची

क्र.सं.	नाम (श्री / श्रीमती)	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तारीख
1.	मात्तच्चन एन वी	वरिष्ठ उप महालेखाकार	31.12.2022
2.	नंदगोपालन टी के	वरिष्ठ लेखाकार अधिकारी	30.11. 2022
3.	सुरेश पी डी	वरिष्ठ लेखाकार अधिकारी	28.02. 2022
4.	रमा देवी आर	वरिष्ठ लेखाकार अधिकारी	28.02.2022
5.	सुरेश बाबु के वी	वरिष्ठ लेखाकार अधिकारी	31.03.2022
6.	जॉय पी इट्टूप	पर्यवेक्षक	31.10.2022
7.	गोपिनाथ पी	पर्यवेक्षक	30.11.2022
8.	रवि के	सहायक लेखा अधिकारी	30.11.2022
9.	सुवर्णाकुमारी एन	सहायक लेखा अधिकारी	30.11.2022
10.	जूडी आईसक पी	पर्यवेक्षक	30.11.2022
11.	नंदकिशोर के	सहायक लेखा अधिकारी	31.12.2022
12.	श्याम कुमार के पी	सहायक लेखा अधिकारी	31.12.2022
13.	तनुजामणि एन	पर्यवेक्षक	31.12.2022
14.	गोपालकृष्णन एम एस	पर्यवेक्षक	31.01.2023
15.	रघुकुमार एम	सहायक लेखा अधिकारी	31.01.2023
16.	मालिनी मेनोन	सहायक लेखा अधिकारी	31.01.2023
17.	मनोज कुमार एमए	पर्यवेक्षक	31.01.2023
18.	सुब्रमण्यन के (नं.2)	सहायक लेखा अधिकारी	28.02.2023
19.	सतीशन एम एस	सहायक लेखा अधिकारी	28.02.2023
20.	अशोक कुमार के आर	सहायक लेखा अधिकारी	28.02.2023
21.	जॉर्ज फिलिप सी	सहायक पर्यवेक्षक	28.02.2023
22.	मेरी ए एम	सहायक लेखा अधिकारी	28.02.2023
23.	कृष्ण कुमार के आर	वरिष्ठ लेखाकार अधिकारी	28.02.2023
24.	रवि कुमार पी	सहायक पर्यवेक्षक	28.02.2023
25.	मिनी शशिधरन	सहायक पर्यवेक्षक	28.02.2023
26.	मीरा सदानंदन	पर्यवेक्षक	31.03.2023
27.	बाबु सी आर	सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2023
28.	शंकरनारायणन के वी	सहायक लेखा अधिकारी	31.03.2023
29.	सुनिल कुमार पी	सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2023
30.	सुशीला एम के	बहुकार्य कर्मी	28.02.2023

प्रकाशक

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,

तिरुवनंतपुरम – 695001